

उस अनपद का काबू हूँ, . . . - १२०
अरधान (कविता संग्रह : १९३४)

• सी.५०, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—५७००

भारत-गाथा

कवि

डॉ० रामकृष्ण शर्मा

एम. ए. (हिन्दी-अंग्रेजी) पीएच. डॉ.

प्राध्यापक, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,

महारानी श्री जया महाविद्यालय,

भरतपुर (राजस्थान)

प्रकाशक

भारती पुस्तक मन्दिर

भरतपुर (राजस्थान)

प्रकाशक *

भारती पुस्तक मन्दिर
जनरल अस्पताल मार्ग,
भरतपुर (राजस्थान)



© सर्वाधिकार लेखक के आधीन *



प्रथम संस्करण *

१४ जनवरी, १९६६
मकर सक्रान्ति स २०४२ वि०



मूल्य : पैंसठ रुपये



मुद्रक *

प्रेम प्रकाशन, सिल्वेण्टर प्रिंटिंग प्रेस
दरवाजा, भरतपुर (राज०)

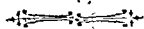
उस जनपद का बहू . २.
भरतपुर (कविता संग्रह : 1984)

: सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003



झूल सब फूल होंय, भँवर हू कूल होंय,
घने पीर पादप हू पल में अमूल हों ।
तारे प्रतिकूल केते हियरा में हूल होंय,
केती हू कवित्त माँहि कबिन की भूल हो ॥
तार तार तूल होंय, रेसम दुकूल होंय,
वनत रसाल सुचि वोये जो बबूल ही ।
वाधा गिरि धूल होंय, दोस निरमूल होंय,
वाल हू न बाँकी जो पै ईस अनुकूल हों ॥

गुरु-वंदना



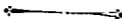
रूप में तिहारे सुनिहारे विधिं विस्तु सिव,
चरन तिहारे ईस लोक दरसैया हैं।
झुकि जात माथ, झरें भाव के प्रमून सुचि,
मरन तिहारी सीनों ताप विनसैया हैं ॥
बरद गिरा के गुनी सुवन ! सुनाम धन्य !
त्यारे ही असीस सों कवित्त सरसैया हैं ।
भारती के नन्दन विराजें रामानद जामें,
हम ती रे भैया ! बाई देस के रूहैवैया हैं ॥



महाकवि भारतीनंदन को आसीस



सारदा के प्यारे, मेरे पूत से दुलारे कवि,
रामकृष्ण भारत की महिमा बखानी है ।
भावकी सुगन्धन सों पूरित प्रसूनन की,
गूँधि छन्द माल पूजी मातु ब्रजवानी है ॥
तीरथ, पहार, नदी, नारी औ महान नर,
कीरति अपार नाहीं वानी में समानी है ।
भारत की महिमा को मरन धरम मानि,
धरती पे सुरग की करी अगवानी है ॥



नमन

भारत की पृथीत बगुन्दरा देव-भूमि के रूप में गौरव-गरिमा तों त्रिभूसित रही ऐ । या भूमि की रज माँहि जंगत के स्वामी साक्षात् ब्रह्म समं समं पं अनेकानेक रूप धारन करिकें अवतरित होते रहे ऐं । ई पुन्य-भूमि राम अरु किसन कन्हैया की लीला भूमि रही ऐ । याई भू माँ रीक्षि कें पुन्य-सलिला भगवती भागीरथी सुरगधाम कू तजि कें आजहू याकी रज कू सोचि सोचि कें धन्य ह्व रही ऐं । भगवान भास्कर की आत्मजा, साँवरे कन्हैया की प्यारी, ब्रज जनन की दुलारी जमुना हू याई सभाग सों रीक्षि कें याकी सिचन करि रही ऐं । हिर्मागरि अरु गिरिराज महाराज हू याकी सोभा कू आजहू बढ़ाय रहे ऐं अरु सिगरे तीरथन की सिरताज पुस्कर हू ह्याई विराजि रह्यो ऐ ।

या पुण्य भूमि, देवधरा की महिमा की गायन करिवे की सामर्थ्य-महेस, गनेस अरु दिनेस में हू नाँय । सेसनाग सहस्र मुखन सों हू याकी महिमा की गायन नाँय करि सकें । या भूमि पं जान जनम ले लीयो, बू धन्य है गयो । याकी रज कू देवताऊ निरन्तर तरस्यो करें । धन्य है ई पुण्य भूमि अरु धन्य हैं याके रहैबैया !

जहाँ कोटि-कोटि घाद्य वृन्द वजि रहे द्रोंय, वहाँ तूती की मंद धुनि कू कौन मुनि सकें ? तऊ बू वजती रहै अरु अपने प्रानन की शंकर सों आरती उत्तारती रहै । सो अनेकानेक सुरीले रमोले वाद्य वृन्दन के बीच मेरे नेहू भरे प्रानन की वीना हू यजिबे लगी तो यामें अचनी काय ?

याके मद-मंद सुर हू आरिती माँहि समपित हैं ।

—रामकृष्ण

उस जनपद का काव्य हू (.)
अरघान (कविता संग्रह : 1984)

: मो.50, गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत महिमा

जो मेरी बिनती मुनों, हे कृपालु ब्रजचन्द !
नर पमु पंठी जो बनूँ, जनम भूमि हो हिन्द !!

× × ×

गगा जमुना हिमगिरी, आम्र कदम अरविन्द ।
तजों सुरग अपवरग हूँ, जनम भूमि हो हिन्द ॥

× × ×

जा रज रीझं स्यामजू, आन लये अवतार ।
ताही रज में जनम मोहि, दीजो वारम्वार ॥

× × ×

कलित कलिन्दी तीर पै, कल कदमन की छाँह ।
रास रचत माधव लखें, लहे लाड़िली बाँह ॥

× × ×

ब्रज भूमि पै स्याम सखा बनिकें, नैदराई की धेनु चरायी करों ।
नित प्रात औ साँझ कमोरी लये, धिरवान में दूध दुहायी करों ॥
कभूँ बैठ कदम्ब की छाँहन में, जु रि ग्वालन में बतरायी करों ।
चाहे पंठी, पसू, नर, पाहन हूँ, ब्रज भूमि पै जीवन पायी करों ॥

—रामकृष्ण

जाही देस माँहि गंग जमुन की धार बहै,
 कूलन कदम्बन तमालन की छैया हैं ।
 जाही हेत छाँड़ि छीर सागर रमा के कंत,
 नर रूप धारे ब्रज वीथिन नचैया हैं ॥
 जहाँ हिमगिरि के उतुंग सीस उमा संग,
 राजें योगिराज कालकूट के पिबैया हैं ।
 ज्ञान गुरु सोने की चिरैया नाम पायी जानें,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैया हैं ॥



नारी जाकी सीता अरु ग्रन्थ जाकी गीता जहाँ,
 तीन घूँट माँहि पूरे सागर पिबैया है ।
 तीन पैड़ माँहि जहाँ नापि लीने तीनों लोक,
 चीर दीये सुत, अस्त्यदान हूँ दिबैया हैं ॥
 रंक मीतहूँ कूँ जहाँ लोकन के राज सीपे,
 भाव हेत झूठे बेर साग के खबैया हैं ।
 जहाँ दानवीर मानवीर ज्ञानवीर भरे,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैया हैं ॥



सावित्री ने जम जीत लीनें सत्यवान जहाँ,
 सत्यहू के हेत हरीचन्द हू बिक्रया हैं ।
 अनुसूया अत्रि के कुटीर माँहि तीनों देव,
 छवि छाये छौना यनि छीर हू पिक्रया है ॥
 प्राण जाँहि, पन नही जानें पावें याही हेत,
 दसरथ जैसे नृप प्राणन तजैया हैं ।
 भरत से भाई, पौनपूत अनुयायी जहाँ,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रे हैवैया है ॥



नर कौ नमूना जहाँ रामचन्द और नारी,
 सीता सम सील साँच धरम धरैया है ।
 गुरु जहाँ धौम्य अरु सँदीपन रिसिराज,
 सिस्यन में किसन सुदामा गुरु भैया हैं ॥
 रसिक जनन सों समाज मान भंग नाही,
 प्रेयसि रिझाय मान भंग करवैया है ।
 जहाँ दही दूध के सरित उमगे है सदा,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रे हैवैया है ॥



जहाँ के दुस्यन्त रसराज के बसन्त माँहि,
 सुमन सुकन्तला को सुरस पिबैया हैं ।
 पुरुरवा प्रीत अरु विक्रम अकूत धारे,
 उर्वसी सी अप्सरो कूँ उर में बसैया हैं ॥
 ऊसा अनिरुद्ध, नेही मालविका-अग्निमित्र,
 प्रेमीजन प्रीत हेत प्रानन रिझैया हैं ।
 जामें गीत गामें ढोला मारू के गवैया नाम,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



जहाँ भये भागीरथ, भू ते नभ जोरि दीयो,
 पुरखन तारिवे कूँ तप के करैया है ।
 ऊँचे उठे धरा ते सुरग माँहि पाई पैठ,
 ईस दू के धारे हेत गंग के रिझैया हैं ।
 शेलवे कूँ बाकी धार काहू के विसात नाही,
 तीन लोक ईस भार, सीस पं धरैया हैं ।
 गेझी गग सुरग सों जाकी धरा, सीची-आय,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



सिसु प्रह्लाद निज जनक की भीति छोरि,
 भोले भाव हू ते ईस नाम के जपैया हैं ।
 हिरनाकुस होरिका दई जो अपार पीर,
 गिरि ते गिराये कालकूट हू पिबैया है ॥
 मोमें तोमें अब अरू बड़ग में व्याप्यो ब्रह्म,
 आत्म अमर अविनासी ना नसैया हैं ।
 रीझे नरसिंह भक्त हेत फार्यो दंत्य वक्ष,
 हम तौ रे भैया ! चाई देस के रूहैबैया है ॥

जहाँ ध्रुव जैसे सिसु संसव में सिद्धि हेत,
 सघन विजन वन तप के तपैया हैं ।
 निज जननी की पीर दाहक विमाता भीर,
 भोरे उर भूरि भक्ति भाव उमगैया है ॥
 कोमल कलित तन दारुन दुसह्य दुःख,
 भीत भूत भैरव भू क्लेश हू जितैया है ।
 रीझे ईस दीयो ध्रुव अटल अमंद पद,
 हम तौ रे भैया ! चाई देस के रूहैबैया हैं ॥

आठों अंग वक्र विप्र बालक बिलोकि नृप,
 जनक विदेह ज्ञानी भरम भरैया हैं ।
 देख अग-अंग अति विद्वब कुद्वब डौल,
 हँसि-हँसि हेर मरजाद हू हरैया है ॥
 हेर बाकी ओर वदु बोल्यो हे रे चर्मकार !
 काहे तन हेर हँसि-हँसि के रिझैया है ?
 हार्यो वेद बानी में जनक, गुरु मान्यो विप्र,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैबैया है ॥



नचिकेता उर में उजारा ब्रह्म ज्ञान केरी,
 सत के सहारे सुरलोक सधबैया है ।
 तोरे भू के सीव सो सदेह जमलोक माँहि,
 निगम अगम ज्ञान जम हू जितैया है ॥
 माया के तिमिर माँहि मोहमयी मनुजाई,
 पथ में हिरानी सो सुपंथ दरसैया है ।
 नर बने नारायन, भू सों दिवि जोरि दीये,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैबैया है ॥



एक राम ऐसे भये तात मात वात हेत,
 छाँड़ि राजपाट जाय कानन वसैया है ।
 एक राम परसु की धार सैस वाहू काटि,
 जननि सुवारि पितु वचन रखैया हैं ॥
 एक छाँड़ी नारि तुच्छ जन हू की वात जानि,
 दूजे छत्र छत्रिन सों छीन द्विज दैया है ।
 छत्रिन में राम द्विज वस में परसराम,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूँहैवैया है ॥



जाही भूमि हेत छीरं सागर हू छोरि दीयो,
 आन वने नद जू के आंगन के छैया है ।
 जमुना के तीर पै कदम्बन की छायेन में,
 सीतल सुगन्ध मंद पौन पुरवैया है ॥
 नागरी नवेलिन के झौर-झौर जु रि जाँहि,
 बीच-बीच ता ता धैया रास के रचैया है ।
 तीन लोक ठाकुर सो ठुमकत जाही ठौर,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूँहैवैया है ॥



करि-करि सुधि जहाँ साँवरे कन्हाई टेरे,
 भरि-भरि आवें चित धीर न धरैया हैं ।
 बंसीवट तट पट पीत फहरान जामें,
 लट लटकनि लाल नंद के रिझैया हैं ॥
 गोपिन के संग भरि अंग में अनंग रंग,
 कुंजनि में संग-संग रास के रचैया हैं ।
 जाकी मांटी चाटी तीन लोकन के ईस हू नें,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैवैया हैं ॥



जाके नर नारी बाल बृद्ध कान्ह-कान्ह टेरे,
 फेर-फेर आवें सुधि वांसुरी वजैया हैं ॥
 गोपिन के प्रान प्यारे ग्वाल रिझवान हारे,
 बंसीवट तट चोरि चीर के चुरैया हैं ॥
 नाग के नथैया, दधि-माखन खवैया, वन,
 गाय चरवैया बलदाऊ जू के भैया हैं ।
 याकी छवि हेरिवे कूँ जामें देव-देव आमें,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैवैया है ॥



जहाँ हरिजन हेत हरी धाये धाम छोरि,
 पगन उपानहू में बास के करैया है ।
 सत गही प्रतिमा भगत उर जागी पीर,
 रोवत रँदास हेत सपन दिवैया हैं ॥
 मोय भेरे भगत सों वेग मिलवा रे संत !
 वाही के उपानहू में प्रान यों वसैया हैं ।
 जाही देस हरिजन पगन में ग्यानी लोरें,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रँहैवैया हैं ॥



बालमीक डाकू के करम करे बन माँहि,
 आते जाते पथिक के प्रानन हरैया है ।
 सतन की संगति सों मोह काम कोह छूट्यौ,
 राम नाम हू के आँख उलटि जपैया है ॥
 ऐसी लागी तारी तन दीमक दिमोला छाये,
 ब्रह्म के समान ज्ञानी ज्ञान सों दिपैया है ।
 पाँचौ वेद रामायन फूट्यौ जा घरा की तेज,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रँहैवैया है ॥



धनि रिमीराज याज्ञवल्क्य रामकथा गाय,
 भगति पीयूष पुन्य प्राण पुरवैया हैं ।
 धनि माता मैत्रेयी औ गारगी सुगुन खानि,
 पूरन पुनीत नारि कीरत धरैया हैं ॥
 धनि उरगारी सुनि कथा काग आनन सों,
 माया की मरीचिका सुज्ञान सों नसैया हैं ।
 जाके नर-नारी खग राम की कथा के पात्र,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



सारे विस्व माँहि सब धरम के देव गनों,
 जेते साधु सत भू पै जनम धरैया हैं ।
 सबकूँ नवाऊँ सीस पगन की धूरि धारों,
 माँहमद ईमा ईस रूप प्रगटैया हैं ॥
 धनि महावीर, बुद्ध दिव्य अवतार जेते,
 धरम धिराने, पाप पीर के नसैया हैं ।
 पूजित तेतीस कोटि देव मेरे एक देस,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



धनि-धनि तीरथ सुधाम मेरे देस माँहि,
 दरस परसि मुक्ति मोद के दिवैया हें ।
 परम पुनीत वद्रीनाथ औ केदार धाम,
 संगम त्रिवेनी भव भीतिहू नसैया है ॥
 विधि कौ पुनीत धाम पुस्कर सुतीर्थ गुरु,
 द्वारिका के नाथ मन प्रान के रिझैया है ।
 कन्यका कुमारी सेतुवन्द तीर्थ धाम जामैं,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रँहैवैया हें ॥



देखिबे के जोग भूरि धाम मेरे देस माँहि,
 दिसि-दिसि हेर-हेर हिया हुलसैया हें ।
 कासमीर माँहि तीन लोक छवि आनि छई,
 भू पै सुरलोक सुसमा मी बगरैया हें ॥
 कोऊ देख पावै कहै ऐलोरा अजन्ता छवि,
 नर तन पाय जग जनम जितैया है ।
 चन्द्र चन्द्रिकान छवि छौरधि मुहावी ताज,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रँहैवैया हें ॥



जाही देस भाँहि विक्रमादित्य मुन्यायी नृप,
 देवदूत सिंहासन सांस पै सधैया हैं ।
 राज के समाज में मुहाये कवि कालिदास,
 कीरति कलित कलिकाल ना नसैया हैं ॥
 आजहू उज्जैन की मुकीरति कलित राजै,
 छिप्रा के प्रवाह में उछाह उमगैया हैं ।
 ऐसौ देस जाके नृप न्याय की तुला में पूरे,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



जीवन कौ छयेय भोग भोगिवे कूँ मान्यौ नाँहि,
 नर तन पाय सुचि धरम धरैया हैं ।
 अर्थ अरु काम कोरे साधन सुमुक्ति केरे,
 नीर विच नीरज ज्यों करम करैया हैं ॥
 करम कौ लेत अधिकार फल ईस हाथ,
 ईत भीत जीत पट रिपुन रिताया हैं ।
 छाँडे लोक सुख परलोक सुख सार जहाँ,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



जहाँ के समाज माँहि द्विज सीस रूप धारे,
 तजि कें विलाम वेद वानी के रचैया हैं ।
 ज्ञान ध्यान करम धरम सुविचार सोधे,
 जीवन को ध्येय मुक्ति मोद सिखवैया हैं ॥
 रिसी सुतः सेप कुत्स दीर्घतमा याज्ञवल्क्य,
 ध्यान की समाधि ब्रह्म रूप के दिखैया है ।
 जहाँ विस्वामित्र जैसे राजरिसी विप्र बने,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया है ॥



उदर को रूप धारे वैश्य को बरन सोहे.
 पुन्य की कमाई पन्य पोसन करैया है ।
 तुला के अधार तोलि वनिज सुनीतिधारी,
 अरथ उछाह में हूँ धरम धरैया हैं ॥
 दंद फद रहित निद्वन्द्व है बढावे भूति,
 अनुचित लाभ कोऊ कोस न भरैया है ।
 स्रम की कमाई ते करत नित दान पुन्य,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया है ॥



जस जनपद का काबू हूँ (१५२०-११)
 भरघान (कविता मण्डल : १९३४)

: सी-५०, गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—४७०००३

कासीवासी तुलाधार वैश्य कौ जनम धार्यौ,
 वनिज करम हू में धरम धरैया हैं ।
 लेंन देंन माँहि कहैं कवहूँ न खोरि कीन्ही,
 असत समाज हू में सत के रखैया है ॥
 वैभव विपुल छोरि लालच सों मुख मोरि,
 तोरि मोह जाल वलिकाल के जितैया है ।
 वनिक वरन हू में काज कीन्हे द्विज के रे,
 हम तौ रे भैया ! बाई देस के रँहैबैया हैं ॥



वीरवर छत्री जहाँ भुज रूप धारे सोहें,
 भुज की कमाई सीस छत्र के धरैया है ।
 सोहत सुसिंहासन राज काज सैन साज,
 देस हित जूझें अरि प्रानन हरैया हैं ॥
 द्विज धेनु धरम सुकरम की आन धारें,
 दीन प्रतिपाल भुवपाल भू जितैया है ।
 आन बान हेत प्रान तजत न संक मानें,
 हम तौ रे भैया ! बाई देस के रँहैबैया हैं ॥



छत्रिन के बाँकुरे सुवन अरि जूथ जोहें,
 अंग में उमंग रन रारि के रचैया हैं ।
 बैरिन के ब्यूह कूँ विलात ज्यों समीर घन,
 मारि के मरोरि, मारकाट के मर्चैया हैं ॥
 चाले तीर तेगु करवान नेजा कारतूस,
 अरि की रुधिर धार होरी हू खिलैया है ।
 काटि-काटि बैरी रन भूमि पाटि दीन्ही जहाँ,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैया है ॥



सेवक ममाज के सो पग उपमान धार्यो,
 करत सुसेवकाई नैम के निभैया है ।
 सहज विनीत निज सीस कूँ नवाय चले,
 सम करि करि नित उदर भरैया है ॥
 मधुर वचन सुचि आचरन धीर धारे,
 सेवक करम करि स्वामिन रिझैया है ।
 जहाँ के ममाज रूपी तन के सुपग ऐसे,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैया है ॥



भारत

गाथा

भारती की आरती में वंदना के गीत गूँजे,
मानस में रीक्षि रीक्षि और हूँ रिझैया हैं ।
रस के अपार पारावार माँहि बूढ़ि बूढ़ि,
तलहूँ में जाय मनि मानिक जुटैया है ॥
भूले सब वर औ विरोध विसराय वंठे,
एक दूसरे को आनि कठ ते लगैया हैं ।
भूरि भासा कलिक ज्यों भारती की बेल सोहें,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



सय ही सुतत्र कोऊ काऊ पै न राज करै,
वेई राज करै जो पै म्हांई के बसैया हैं ॥
काऊ देस माँहि न परायौ कोऊ चंट करै,
“जीओ और जीने दो” के पालन करैया हैं ॥
पंचसील गुट निरपेक्षता को नेंम साँची,
कोऊ याय तोरै बाकूँ पाठ के पढैया हैं ।
नीति धारी मीत औ अनीति धारी अरिजाकी,
हम तो रे भैया वाई देस के रहैया है ॥

सब सौ है प्रीत भीत कवहूँ न काऊ संग,
 वसुधा कुटुम्ब नर नारि भेन भैया है ।
 पर उपकारी रखवारी सरनागत की,
 मीत के रखैया अरि जूथ के जितैया है ॥
 मान भरजादा हेत प्रानन कौ त्याग करै,
 नेह के निभैया, अभिमान के रितैया है ।
 जहाँ नर नारी बाल वृद्ध जियें जीवट सों,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूहैया है ॥



नेता मेरे देस के सुनीतिधारी सचि भये,
 जनता कौ पालन सुपोखन करैया है ।
 दादाभाई, मालवीय, गोखले औ लाजपत,
 देस की सुतंत्रता के सुपने सजैया है ॥
 घनि सो सुभास जासों अरि के हवास खोये,
 बापू औ जवाहर सुराज के सजैया हैं ।
 जनता कौ जनता से जनता के हेत राज,
 हम तौ रे भैया ! बाई देस के रूहैया है ।



क्षात्रि कलू देस की कुभाग कहू दीख रहौ,
 जनता कूँ चाये जात, जनता-रखैया हैं ।
 रावन औ कंस के करम कलू कीये जात,
 पैदा है पिताच पाप घट के भरैया है ॥
 धेनु बनी धरती तिनूका मुख माँहि रोत,
 लंगे अवतार दुष्ट दलन दरांगा है ।
 जहाँ पुनि धरम सुकरम की राज होय,
 हम तीं रे भैया ! बार्द देस के रूँहैयेया है ॥



कहा दना करी मेरे देस की ओ राजा राम !
 मोचन कहाँ हो ? त्तारे जन धिपायेया है ।
 दीनन की दमन ममन साधु सन्त सुधी,
 धरम करम गुधिचार धिनसैया है ॥
 चहुँ ओर जाल सी पुर्यी मे पाप कर्म केरी,
 जात निरदोष गडयंत्र गों पसैया है ।
 जामें अधरम के विनाग हृत आते रहे,
 हम तीं रे भैया ! बार्द देस के रूँहैयेया है ॥



जाकी छवि हेर हरि लोक हू हिरानों होय,
 चहुँ दिसि सुसमा सुसिन्ध सरसैया है ।
 कूप वापी वाटिका विटप वर वल्लरीन,
 कुसुम कलीन मिस रस वरसैया है ॥
 सोहत सुभग सर मरित सलिल पूरे,
 मडित तरंग मुचि ताल औ तलैया है ।
 जहाँ पग-पग पै प्रमोद के पयोधि सोहें,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैवैया है ॥



कदम कदम पै कदम्ब कुज केलि पुज,
 कोकिल कलित कूँके पुंजनि पपैया है ।
 तरनि तनूजा तीर नाचत मयूर मजु,
 सुक सारिकाहू वेद वानी के जपैया हैं ॥
 घरा की नयोडा जहाँ हरित दुकूल धारे,
 प्यारे नभ हेर हेर हिये में लजैया है ।
 चहुँ ओर नाचत ज्यों नर्तकी निसर्ग छटा,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैवैया है ॥



कोऊ कवि वरनि न पावै या छटा कौ छोर
 छीरधि लौ छाई जो त्रिलोक ना समैया हैं ।
 दच्छिन के नीरधि सों उठत तरग जाकी,
 कन कन सीचत हिमाद्रि लौ उछैया हैं ॥
 द्वारिका सों उठत हिलोर प्राची छोर छयै,
 दिसि दिसि दुनी द्वार सोई छवि छैया हैं ।
 वरनि न पामें हंस वाहिनी विधाता ताहि,
 हम तौ रे भैया ! बाई देस के रूहैवैया है ॥



रितु-क्रम ऐसी जैसी हेरे न हिरात कहूँ,
 विधना हू रीझि के सँवारि सो वनैया है ।
 चार चार माह की रची हैं तीन खरी रितु,
 चारु चक्र माँहि मन मुदित जमैया हैं ॥
 बीच बीच माँहि तीन नूनी रितु जोरि दीनी,
 तिनमें निसर्ग निज सुसमा सजैया है ।
 वारह हू माह जहाँ ललित लुनाई छाई,
 हम तौ रे भैया ! बाई देस के रूहैवैया है ॥



आवत असाढ घन उमड़ घुमड़ छावे,
 छिति ते छितीस लौ छछारे छवि छैया है ।
 बरसत वादरा परसि भू के अग अंग,
 सग सग दामिनी की दुति दमकैया है ॥
 निरझर झर झर सरित सुगति झूमें,
 वापी कूप उमगत सर सरसैया है ।
 यच्छ विरही के हेत वादरा हू दूत बने,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रे हैबैया है ॥



मावन की सोभा तीन लोक हू सों न्यारी इहाँ,
 विटप विहेंसि वल्लरीन छवि छैया है ।
 हरित भरित भू के वैभव विपुल राजि,
 भू ते दिवि छोर लों विभूति वगरैया है ॥
 मुक पिक सारिका पपीहा कल बोल बोले,
 तन मन माँहि मोद मंजुल भरैया है ।
 गावत मल्हार नारि झूला औ हिंडोला झूले,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रे हैबैया है ॥



२८

उस जनपद का
 अरघान (कविता संग्रह : 1984)

50, गौशमर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तीजन के मेले में सुरंग साज सजीं नारि,
 झमकत दमकत गावत गवैया हैं ।
 धानी चीर छूँघट में छुपे न छुपाये नैन,
 कामिन कटाच्छ असि धार लौ चुभैया है ॥
 लचकत कटि मचकत मदमाते अंग,
 रंग में अनंग के उरोज सरसैया है ।
 देख देख रीझें रसराज के रसिक जहाँ,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया हैं ॥



धनि धनि श्रावणी की कसौ है पुनीत पर्व,
 भैन वांधे राखी भैया उर हरसैया है ।
 सूत के दो धागे कसौ बंधन अटूट वाँछयी,
 प्रान जाँहि याकी मरजाद न नसैया हैं ॥
 रस बरसामते जमाई घर माँहि आमै,
 चाँमर सिमैयाँ घृत बूरे के खवैया है ।
 कोकिल के कंठ कूँ लजाय नारि गारी गावै,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया हैं ॥



भादो की अँध्यारी कजरारी कारी रैन जोहें,
 द्वापर की सुरति साँ हीयो उरझैया है ।
 कम कारावास माँहि वसुदेव देवकी के,
 छौना वनि छीरसायी छोभ के नसैयाँ हैं ॥
 सूप माँहि सिमु धारे जमुना की धार बीच,
 मलिल चढत ईस पाँव परसैया हैं ।
 नद जू के भौन जहाँ लोकन के नाथ पोसे,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



बवार के दमैरा में जुरत नर नारि भारी,
 मेले के मिलन उर पीर के नसैया है ।
 गूँजे गीत गाजे सग वजत विपुल वाजे,
 भूपन गों अंग साजे चग हू गुँजैया है ॥
 नैन जात, घात जात, रहेंट झुलात जात,
 जीजा सारी हाँसी टट्टे रस वरसैया है ।
 कोऊ गेगाँ देम ना धरा पै याकी गरि करे,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



बाल वृद्ध नारी नर नवल उमंग संग,
 देखत सुकौतुक दनुज दलवैया हैं ।
 रावन की प्रतिमा में भरत पटाने सुरी,
 राम कौ वनाय रूप आंच सुलगैया हैं ॥
 फूटि फूटि भटकत अंग अंग राकस के,
 कर्म हेत फल देत राम जू गुसैयां हैं ।
 जहाँ देव जीतें औ दनुज दल नासे जाँय,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



झाँझी घट दिवला की जगमग जोति जुरें
 पूजि पूजि सरित तरंग थिरकैया हैं ।
 नाचै गामें झूमि झूमि अलक अधर चूमि,
 अगना के अंगन अनग अलसैया है ॥
 बुजनि में छिपत दिपत तऊ तन तेज,
 दौरि देत रसिक जनन गलवैया हैं ।
 जहाँ रसरंग की तरंग सतरंग सोहें,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



चारों मास पावस के साठ सों आसौज ताँडि,
 रिमझिम छिम छिम वारि वरसैया हैं ।
 कवहुँ गगन विच स्याम धन धिर जाँय,
 मूसल की धार ज्यों हू धार धरसैया है ॥
 गगगगग गरजन तड़क तड़ित पात,
 कम्पित कै गात गात धीर के हरैया है ।
 कभूँ सात रगन सों इन्द्र धनु मन मोहै,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूहैया है ॥

ॐ

कातिक सों होम अथ सरद सुहानी रितु,
 दिवस सिराने निसि सीतल सुहैया हैं ।
 रजत वितान भू ते दिवि तावूँ तानि दीये,
 कन कन कनक सुआभ सों पगैया है ॥
 नदी नद नीर अति विमल सुस्वाद हाँत,
 वन उपवन तह बेल विकसैया है ।
 तन माँहि, मन माँहि, मोद न समात जहाँ,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूहैया है ॥

ॐ

उम जनार
 प्रथम (कविता संग्रह : 1934)

1-50. गौरनगर, मातर विश्वविद्यालय, गागर—470003

राका की रजनि जामें रजत की रेलपेल,
 धरा ते द्युलोक माँहि मोद वरसैया है ।
 राकापति रजत सुसिन्धु माँहि रूप रासि,
 रस्मिवाल सुधा के सुधार भरवैया है ॥
 जन जन जीव जोनि जोति जाल ओतप्रोत,
 सीतल सुधा के सिन्धु माँहि उतरैया हैं ।
 अनत अनन्द उमगत जाके ओर छोर,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैवैया है ॥



द्वार द्वार दीप माल दिपत दिगन्त दुति,
 शिलमिल ज्वाल जाल अमित उछैया हैं ।
 रूपराशि पगी पट घूँघट की औट मुख,
 चन्द्र हू लजात तम तोम में छिपैया है ॥
 गोरे भुजमाल में जु थाल दीप पूरे रुरे,
 ऐसी छवि अवनी में कहैं ना दिखैया है ।
 पूजत गनेस रमा वजत सुवाद्य वृन्द,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैवैया है ।



माह अगहन, प्यारी पिया सो लगवै मन,
 हे रे परदेसी ! कयो हू तन तरसैया हें ?
 बढत नुसीत लागे मनुआँ हू भीत भारी,
 मदन कदन यों करेजा कसबैया हें ॥
 राति यो मिराति सी सी मुख सों निकरि जात,
 दिन तनुताई रैन अनत बढैया है ।
 जाके नर नारी नित नेह सो रिझावे जीव,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैवैया है ॥



आर्या पूस माह, अजहुँ न सुधि लीनी नाह,
 प्यागे मुख स्याह पाती पीतम पठैया हें ।
 हे रे गेरमोही ! काहे बिरहा डुवोई अब,
 आसरो ना कोई जीव जोति नों बुझैया है ॥
 ताही छिन बँट्याँ काम आइके मुड़ेर ऊँची,
 गिर्याँ गे उझीना, उर आम उपजैया है ।
 जाही देस माँहि नर नारि नेह ऊर पूर,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैवैया है ॥



नाश का महीना, पीर जात ह सहीना उर,
 धीर ह रही ना, कित प्रीतम वसैया हैं ।
 दिन हू न चैन, बीते क्यों हू ये छमाही रैन,
 निकसैं न बैन उर अन्तर रिसैया हैं ।
 नग की सहेली समझावें हे री भोरी भट्टू !
 पीतम तिहारे जन्म-भूमि के सिपैया हैं ।
 मानू भूमि हेतु जहाँ नवल नवोढ़ा तजीं,
 हम ती रे भैया ! चाई देस के रहैया हैं ॥



फागुन कौ मास, कन-कन में सुवास उर,
 हास के विलास अंग अंग हरसैया हैं ।
 तैमी वहै सीतल सुगध मंद मंद वाय,
 मौरम सुधाय प्रान पूरि पुलकैया हैं ॥
 वन उपवन सर सरित सुकुंज पुंज,
 मजुल मिलिन्द मकरन्द हू पिबैया हैं ।
 नृलोक हू ते जहाँ सुसमा अनन्त गुनी,
 हम ती रे भैया ! चाई देस के रहैया हैं ॥



आर्द्र रितुराज सग सुसमा सुराज सींहे,
 तन मन माँहि मजु मोद तरसैया है ।
 वागन में वेलिन मे नागरी नवेलिन में,
 नेही जन मन माँहि मजु दरसैया है ॥
 विहँसि गुलाल मलि कलित कपोल लाल,
 ललना के लोचन ललाम अनखँया है ।
 खिले जहाँ फाग नाचे चाँचरी मुहाग हेतु,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया है ॥



आयी चैत मास पिल्यी ग्रीसम सुहास, नभ
 मूरज को तेज दिन दूनी अधिकैया है ।
 दिन अधिकाने, रैन घटत विलाने भोर,
 लगत सुहाने भायँ सीतल सुछँया है ॥
 गेनन में फसल समेट खलिहान सोहें,
 मिले की विनाई पमु पसर चरेया है ।
 जहाँ वसुधा के वमु धान के निधान भरै,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया है ॥



पूजन चली सु गनगौर गोरी गीत गात,
 मोलैहू सिंगार तन मन हुलसैया हैं ।
 सीम पै कलम दारी सात पात्र जल पूरि
 हरी हरी द्वय पै सुमन सरसैया हैं ॥
 सोहत मुरग परिधान गजगामिनी यों,
 फूली फुलवारी ज्यों अनिल लहरैया हैं ।
 माँगत मुहाग मनगौरि गोरी पूजि जायें,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं ॥



मान है वीसाय वामें जमत किसान माख,
 कोम भरपूर मूल व्याज सों चुकैया हैं ।
 फौटी धरे ताक, वह आवत जमत धाक,
 जुरत ममाज नुकतान हरसैया हैं ।
 उछरत पाग दिन गवत कन्हैया राग,
 माँझ कूँ चाँपाल ओझा गोठिया खिलैया हैं,
 जायें लोक परलोक दुहुन के सुख सोधें,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं ॥



जेठ की महीना तन चुअत पसीना नभ
 तपत अरक ज्वाला जाल वरसीया है ।
 भूते दिवि तानूँ हौम कुंड सौ दहत जामें,
 परि जरि जीउ वन्हि बीच अकुलीया है ॥
 तर तेऊ नीचाँ अब उत्तरि मुअम्ब गर्याँ,
 नदी नद कूप बापो वारि हू रिलीया है ।
 याह् रितु माँहि रसियान के गर्दीया जहाँ
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैरैया हैं ॥



देस देस व्यापी मेरे देस की सुकीरति यों,
 या है मति छेरी कोऊ, नम के निभैया है ।
 मीत के तो मीत, बीरी भूल माँ नसानहार,
 नदी वाकूँ साधें, अकड़ल के नलीया है ।
 गहत अहिंसा साँच मय सों मितार्ई मानि,
 भूल हूँ माँ कायरता उर न धरँवा है ।
 मीतन के मीत, अभिमानो हेंत जमदूत,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैरैया है ॥



मुनि लेआँ लोग मेरे देस कोऊ सत बात,
 चाहीं जो जगत जन नुख मों बसीया है ।
 कोऊ काऊ उर के सुस्वाभिमान छेरी जनि,
 सब जन हेन मनमान दर्साया है ॥
 भीया भंया भूलि भेद भग्म भलाय देआँ,
 एक ब्रह्म गो ही मन जनम धरिया है ।
 जाकी बात मानि सब जगत मे चंन होय,
 हम ती रे भंया ! वाई देस के रूँह्वैया है ॥



मेरी देस भूतल पं प्रकट्याँ प्रथम जोति,
 लीकें ब्रह्म सत् चित् आनंद उछैया है ।
 जानें जो भूगोल ताय पूछि लेआँ हिमगिरि,
 भू की धुरी सब मों प्रथम प्रकटैया है ॥
 याके आस पास जो सुवास जोग भूमि भई,
 वापं जगती के जन प्रथम बसाया है ।
 प्रथम सृजन भू की प्रथम मनुज वाग,
 हम ती रे भंया ! वाई देस के रूँह्वैया है ॥



देव लोक देवगन किन्नर गन्धर्व यच्छ,
 इन्द्रपुरी अलका जो नाम मुनवीया हैं ।
 सप्त हिम गिरि के विविध सिखरन पैई,
 आर्यजन विविध कलान के रचैया हैं ॥
 नृप गान, वाद्य वृन्द जीवन सुरग राज,
 अकहू निसर्ग की सुरस बरसैया हैं ।
 आर्यजन वास भू की प्रथम निवास जो है,
 हम ती रे भैया ! चाई देन के रूँहैया है ॥



त्रिमगिरि के ही उच्च सिखरर समूह माँहि,
 वसे हुते पुर सो ही सुरग कहैया है ।
 हमरे ई दादा परदादा देव जाने जात,
 बिनकोई नृप सुरराज पद पैया है ॥
 ऐरावत, उच्चश्रवा कामधेनु कल्पतरु,
 बिनकेई वैभव विपुल बगरैया है ।
 जाकी विभुता की प्रतिच्छाया विश्ववैभव ये,
 हम ती रे भैया ! चाई देन के रूँहैया है ॥



वरुण कुवेर सक्र सारद गनेस सेस,
 अमर कहाये सत करम करैया हैं ।
 विनके ही वंसज विलास माँहि बूड़ि बूड़ि,
 मृत तुल्य वने मृत्यु लोक के बसैया हैं ॥
 छीर साई विस्नु औ कैलासवासो महादेव,
 ब्रह्म लोक स्वामी विधि ईस पद पैया हैं ।
 जाही देस करि ऊँचे करम अमर भये.
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैवैया हैं ॥

दंड हेत घोर कारावास कौ विधान हुतां,
 नरक कहायां भूरि, भीत सों भरैया हैं ।
 जमराज जमदूत न्याय कारी दंडधारी,
 पापी जन पकरि नरक भिजवैया हैं ॥
 दोसी दंड पाहीं निरदोस निरभीक हुते,
 दूध पानी न्यारौ न्यारौ न्याव के करैया हैं ।
 ऐसी न्याय पालिका सुन्यायी, जाही देस माँहि,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैवैया हैं ॥

जेती कथा निगम ओ आगम बखानी हतीं,
 कछू अभिधा सों वाच्य अर्थ की दिवैया है ।
 किती देत लक्षणा सों भाव के अनूठे सार,
 व्यजित सुअर्थ सार केतिक सजैया है ॥
 कहूँ रिसी मुनिजन भायो ऐ प्रतीक अर्थ,
 कथित यथार्थ में आदर्स पुरबैया हैं ।
 बेद सास्त्र रामायन गीता सों समृद्ध जो है,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



जामें देववानी वेदवानी अति सारजुत,
 पाय संसकार संस्कृत नाम पैया है ।
 बाते जनमी हैं भूरि भाषा देस काल भेद,
 पाली अपभ्रंस कछू प्राकृत कहैया है ॥
 दसमी सदी के ओर पास हिन्दी विकसी जो,
 गुनन सों जन जन मन हूँ सुभैया हैं ।
 राष्ट्रभासा बनी जाकी गौरव बढ़त जाय,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



भारत

गाया

एक भर्याँ पूरी वाग सोहत हमारी देस,
विविध घिटप' बेल सुमन सुहैया हैं ।
घरम अनेक वेपभूपा खान पान भेद,
ऐसी है अनेकता मुरंग सरसैया हैं ॥
दीसै जो विविधता में एकता या देस माँहि,
वाकी सरि कोऊ देस कहै न करैया हैं ।
हिल मिल सोहत ज्यों हार में विविध फूल,
हम ती रे भैया! बाई देस के रँहैया हैं ॥



चाहै कोऊ बोली बानी आंचर औ प्रान्त कोऊ,
जाति पाँति कुल कोऊ घरम धरैया हैं ।
एक मेरी देस बाकी आँखिन' के तारे सब,
भेद भाव भूलि सब सगे भँन भैया हैं ॥
जानें कौसो संस्कृति के प्रानन पीयूष पोख्यो,
क्षेलि सेलि क्षौका ये तो आजहू जिबैया हैं ।
पाय कें सँजीवनी सुधा सों जर पूर' जो हैं,
हम ती रे भैया! बाई देस के रँहैया हैं ॥



महाकवि वाल्मीकि वेदव्यास कालिदास,
 काव्य के पीयूष जिन प्राण सिंचवैया हैं ।
 रामायन गीता रघुवंस जैसे ग्रन्थ रत्न,
 विस्व मांहि जाकी काव्य भूति के थढ़ैया है ॥
 ज्ञानी जाके विस्व गुरु, दानी उपमान नाहीं,
 मानी स्वाभिमानी महा कभू नां झुकैया है ॥
 जोहू दीठ आवै वामें अमित सुनाम धार्यौ,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैवैया है ॥



नाटक लिखे हैं भिन्न भासा मांहि कोटि कोटि,
 कोऊ तो मुकन्तला की सरि ना करैया हैं ।
 गीत काव्य मांहि भेषदूत सौ मधुर को है ?
 नीति ग्रन्थ पंचतंत्र अतुल बनैया हैं ॥
 कोमल औ कान्त गीत गौविन्द सौ कौन ग्रन्थ ?
 कादम्बरी गद्य उपमान बिनसैया हैं ।
 गनन गनेम ह न पावै गिरा मान होत,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैवैया हैं ॥



उपमा में कालिदास कोइ उपमान नाहीं,
 अर्थ गरिमा में भारवि सुनाम पैया हैं ।
 पद के लालित्य में सुदंड़ी कवि सिरमौर,
 माघ में त्रिगुन एक संग सरसेया है ॥
 भाव-रमनी के उर रस की पीयूष धार,
 कला के विभूषण हू तन पै सुहैया है ।
 काव्य औ कला की मनि कंचन सुजोग जामै,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैवैया है ॥



धनि धनि सूर जानें स्याम हू रिज्ञाय लीने,
 गऊघाट बैठ तानपूरा के बजैया हैं ।
 महाप्रभु बल्लभ के पग नख जोति पाय,
 "सूर ही घिघात काहे" लीला वरनैया हैं ॥
 आंधरी व्है बाहर सां अन्तर उजास पायां,
 दीखं ब्रज वीथिन में नंदजू के छैया हैं ।
 गोप ग्वाल लाल लाड़िली की लीला धाम न्यारी,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैवैया हैं ॥



बाल लीला वरनि बहायी वात्सल्य नद,
 कौनों कौनों झाँकयो कछू सेस न वचैया है ।
 नर है कें जननी को हीयो पायो जान्यो जात,
 बाल हाव भाव उर अन्तर रिझैया हैं ॥
 नन्दलाल लाडिली के नेह को बखान कर्यो,
 वरनि सिंगार रसराज पद पैया हैं ।
 चरन कमल बन्दि सान्त रस सींच्यो जामें,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैबेया हैं ॥



मूर बने मूरज सुकाव्य नभ तेज पूरि,
 तुलसी सु सीतल सुधा के बरसैया हैं ।
 चंदा है कें चांदनी की छटा छिटकाई जानें,
 काव्य के पीयूष पीर ज्वाला के बुझैया हैं ॥
 देग्र कें भमाज बीच रावन से दैत्य दल,
 धनुवान धारी राम धरनि बुलैया हं ।
 धरम उधारिवे कूँ ईस अवतारी जामें,
 हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैबेया है ॥



भारत

गाथा

धनि धनि तुलसी के राम भू के भार हारी,
भगत वछल तीन लोक के गुसैयाँ हैं ।
कहे नाथ ! रुसे मेरे देस सी दयालु है कै,
केवट पिसाच नाव झिझरो डुवैया है ॥
त्यारो लीला धाम प्यारो देस जो ललाम बाकी,
गौरव नसायो आन वान हू नसैया हैं ।
एक ही सहारो जो है, देस राजा राम त्यारो,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैया है ॥



जाती देस माँहि कवि भये है कवीर जैसे,
सत्य हेत सूधी सूधी सबकूँ मुनैया हैं ।
नकसे न बाहान न मौलवी तुरक कोऊ,
ढोंगी धरमान्ध धुनि धज्जियाँ उड़ैया हैं ॥
हिन्दू इस्लाम राम खुदा की भुलायो भेद,
मन्दिर औ मस्जिद की साँव समझैया हैं ।
जनन सों राखि धरो आतम चदरिया हू,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रूहैया है ॥



सूफी संत जार्जे मुधा पेम की पिवाई छकि,

उर के पयोधि नेह ज्वार लहरैया हैं ।
कुतुबन जायसी ओ मझन मुमोद मानि,

प्रेम पीर वरनि सुकाव्य मरसैया हैं ॥
धनि ये मुसलमान, हिन्दू प्रेम गाथा गहीं,

है के भाव मगन सुमन हरसैया है ।
जार्जे भिन्न धरम के भेद भानि भाव भरे,
हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैवैया है ॥



पद्म्यो पदमावत पुनीत प्रेम पूरि पूरि,

अर्थ हूँ परोक्ष ओ प्रत्यक्ष दरसैया है ।
आतम रत्नमंन, हीरामनि गुरु पाय,

नागमती-माया के कुबंधन तुरैया है ॥
पचावनी ब्रह्म राजें सिंहल सुरग मांहि,

प्रेम फान मांहि जीव ब्रह्म हूँ बंधैया है ।
आके कन कन मांहि राजत सुब्रह्म जोति,

हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैवैया है ॥



भारत

गाथा

राम की चरित तुलसी के ग्रन्थ रत्न मांहि,
माया की मरीचिका के बन्ध बिनसैया है ।
लोक परलोक की सुरीति नीति आनवान,
राम राजहू का रूप रुचिर रचैया है ॥
लोक नायकत्व का नमूना यासे ऊँचा नाँय,
जन जन हू कूँ करतव्य के सिखैया हैं ।
निरगुन सगुन औ ज्ञान भक्ति मेल जामें,
हम ती रे भैया ! वाई देस के रँहवैया है ॥



प्रेम की दीवानी मीरा, लोकलाज तोरि दीनी,
गिरधर नागर के नेह में रिझैया है ।
जाके सिर मोर सुकुट बूही पति मान्या है,
वाही हेत पगन में घुँघरू बंधैया है ॥
अँसुआन जल सींच सींच नेह बेल बोई,
फँली प्रेम बेल सो आनंद फल खैया है ।
बिस होत मुधा सर्प ठाकुर काँ रूप जामै,
हम ती रे भैया ! वाई देस के रँहवैया है ॥



जहाँ रसखान औ रहीम आन धर्म धारे,
 हिया में ममाये प्यारे किसन कन्हैया हैं ।
 जहाँ घन आनंद बुजान में सनेही हेर,
 ब्रज पूरि डारि डारि प्रानहू तजैमा है ॥
 जहाँ द्विज सेख रंग रेजिन के राग रंगे,
 हिय हरसाय नवि आलम कहैया है ।
 जहाँ भरे गागर भे सागर विहारी लाल,
 हम तो रे भैया ! चाई देस के रूहैबैया है ॥



जहाँ सतसैया के मुदोहरे अरथ पूरि,
 नाविक के तीर बने ध्येय के सधैया है ।
 पचाकर देव मतिराम द्विजदेव काव्य,
 भाव औ कला के रस रसिक रिझैया हैं ॥
 नग्न सिन्धु नायिका के भेद औ विभेद सारे,
 वरनि बघाने सो तो छिति छेम छैया है ।
 जाकी ऐ बेजोड़ सब जग में सौन्दर्य-बोध,
 हम तो रे भैया ! चाई देस के रूहैबैया है ॥



केमव जो काव्य-नभ दिपत नखत जोति,

रत्तिक समाज मांहि रस पुरबंया है ।

नाव्य कला कलित सुललित सुनाम धारी,

कविता की वनिता कूँ भूसन सजंया है ॥

स्वैत कच हेर जो हिरानों हिय मांहि भारौ,

चंद बदनीन वावा कहे बिलखंया है ।

रची जहाँ राम जू की चन्द्रिका सुछंद भूरि,

हम ती रे भैया ! वाई देस के रं है बंया है ॥



भूमन भन्यौ जो भारी ओज सों जतुंग तेज,

वीर रस मानों नर-रूप ही धरंया है ।

फड़क उठत भुज दंड अरि चंड खंड,

देत जो प्रचंड दंड दुस्टन दलेया है ॥

और राजा राव कोऊ मन में न ल्यायो जानें,

सरजा सिवाजी छत्रसाल के गभंया है ।

कोऊ जाकी बार बांकी करि हू न पायो मरूँ,

हम ती रे भैया ! वाई देस के रं है बंया है ॥



भोग औ विलास रस बूढ़त सुदेस हेर,
 संख के निनाद सीये देस के जगैया है ।
 हरीचन्द भारत के इन्दु वनि सुधा सीच,
 जन जन मन देस प्रेम सों पगैया है ॥
 ध्येय लै सुधार की दुवेदी जुग जोति जगी,
 हरिओध मैथिलीसरन कविरैया है ।
 छायावादी पंत औ प्रसाद महादेवी सूर्य,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



कथा के सम्राट मुंसी प्रेम चद देस माँहि,
 जन जन बीच दुःख दरद दिखैया है ।
 बिसम समाज माँहि हेरि कें समस्या जाल,
 दूरि कभिबे कूँ जन ध्यान हूँ गिचैया है ॥
 धन औ विलास कूँ महत्व कोऊ दीयाँ नाँहि,
 ऊँची ध्येय राखि तप-जीवन जियैया है ।
 लेखनी की मान, जहाँ वंभव विलास ऊँने,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



भारत

गाथा

मुराओ असुर मिल सागर मथित कीयो,
रुचिर रतन पाय हिय हुलसैया हैं ।
सुर सुरराज कछु लीये जो त्रिलोकीनाथ,
असुर कादम्ब संभू विस के पचैया हैं ॥
धरती के हेत धनवन्तरि सुपात्र कर,
सुधा काँज सार आधुर्वेद के रचैया है ।
मंथम सुपथ्य दीर्घ आयु आयुर्वेद जाँमें,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



जहाँ के कौटिल्य करे अरि कूँ समूल नास,
कुस हो या महानंद नींव सों नसैया हैं ।
प्रतिमासों पूरित सुराज काज माँज माँहि,
सिस्य चन्द्रगुप्त राजगद्दी के दिवैया हैं ॥
तन बल हास्यो जाकी लेखनी अमर भई,
अर्थ हूँ में दच्छ अर्थसास्त्र के रचैया हैं ।
केते गुनी देस देस के हूँ गुन गामें जाके,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ।



मैया-वाप-भगत सरवन जैसे सुत कहाँ ?

तीरथ लै जात कांधे कावर धरैया हैं ।

एक भयी भरत दुत्यंत सुत सूर भारी,

वालक हूँ सिंह-मुख दंत गिनवैया हैं ॥

अर्जुन के लाल अभिमन्यु भेद चक्रव्यूह,

महारथी भीत सों अनीत अपनैया हैं ।

धन्य मेरी देस जाके सिसु हूँ सुनाम करै,

हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैबैया है ॥



घनि रे प्रताप ! त्यारे गावत प्रताप कवि,

छोरि राजपाट बन सघन बसैया है

अकबर आन वान पानिप पै पानी फेर,

मैया की सपूत कहै सीस न झुकैया है ।

चेतक चढ़्यो सो हल्दी घाटी को हजारी वीर,

मानी मानसीग मान मांटी में मिलैया है ।

खाई रोटी पास नी, लजायो नांय मां की दूध,

हम तो रे भैया ! बाई देस के रूँहैबैया है ॥



सरजा सिवाजी जीजावाई के सपूत वीर !

धरम करम देस लाज के रखैया हैं ।

हाँकी दै हिरानों अवरंग भीति आनों, फोरी,

खोपरी खवास खाँ, साइस्त हू सिरैया हैं ॥

अरि नारी आनी जु सिपाही, ताहि हेर हेर,

जननी की रूप वा सुरूप में दिखैया हैं ।

ऐसी मेरी देस जाके वीर यों चरित्त वारे,

हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



ऐसी मेरी देस जामें पान करी गंगनीर,

तुलसी के दल आम कदली फलैया हैं ।

मन्दिर में जाय मन मोहन प्रसाद भोग,

दोना में पँजीरी पंचामृत हू पिबैया हैं ॥

झालरिकी धुनि घंटा घोरन सुनाद सुनि,

संख की निनाद ईस आरती गबैया हैं ।

कोटि सत सुरग सुधाम जापे बलि जाँय,

हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



याकी छवि चरनि सर्वे को सेस सारदाऊ,
 याके गुन गन गावें कौन सो गवैया हैं ।
 साँने की चिरैया, ज्ञान गरिमा की धाम न्यारी,
 किये जो सुनाम न गनेस हू गनैया है ॥
 लीयी जो जनम, याकी अन्न जल तन माँहि,
 लै कें नाम याकी, प्राण याई पै तजैया है ।
 विन्ध की विभूमन, दौकुण्ठ धाम ईमहू को,
 हम ती रे भैया ! याई देस के रूँहैया हैं ॥



विनयी जो सुनि परे व्रजचंद कान तेरे,
 हे रे मन मोहना जो मेरी हू सुनीया है ।
 याती न्यारे चरन में दास राखि लीजो नाथ !
 जनम मिली ती प्राण हिन्द के रिझीया हैं ॥
 नरत्न पाँयो पसू कीट औ पतंगा कोऊ,
 करमू करे को जोहू जौनि जीव जैया हैं ।
 जामे द्रिमगिरि गग जमुन रिझावें जीव,
 हम ती रे भैया ! याई देस के रूँहैया हैं ॥



मेरे देन माँहि नर नारी की निहारौ नेह,
 जनम जनम प्रान संग के निभैया है ।
 आधी अंग नर आधी नारी अर्द्धांगिनी कौ,
 छूट हथलेवा नाहि प्रान हू तजैया हैं ॥
 व्याह मेरे देस में ताँ तन कौ व्योपार नाँय,
 प्रानन के फेरे काऊ भाँति न नसैया हैं ।
 सीता अनुसूया सती माण्डिली सी नारि जामैं,
 हम ताँ रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥

नारी रूप सवित मेरे देस की विभिन्न रूप,
 धारि निज अरम सुधयेय की सधैया हैं ।
 रमान्व धारि कैं रिझाये नर रूप हरि,
 नर नारी जोग सों जगत सिरजैया है ॥
 चड़िका के रूप बनी देवी सिंह वाहिनी हू,
 भगत उधारि दुष्ट दलन दलैया हैं ।
 नारी पूजा होत जहाँ रमन करत देव,
 हम ताँ रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥

जीवन कुटुम्ब जैसें खिल्यी ऐ उद्यान कोऊ,
 नर और नारी ज्यों सुमन विकसैया है ।
 सिमु वृन्द विकच कलित कलिका से सोहें,
 झोंकन समीर सों सुरभि सरसैया है ॥
 बाल वृद्ध नारी नर वेंधे मरजादा डोरि,
 मक्को सनेह सुचि आदर दिवैया है ।
 निज निज करम धरम कानि जाके मांहि,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रेहवैया हैं ॥



घर घर धेनु धन भूमरे दरम होय,
 ऊसा काल में ही नारी दधि की मथैया है ।
 गावत मधुर गीत रेत औ बगीची जाय,
 करत कलेऊ छाचि रावरी पिवैया है ॥
 भोजन में फल फूल दही दूध रोटी साग,
 ह्यी मूकी मिले सोई घाय हुलसैया है ।
 लोक परलोक दोऊ सुधरत जाके मांहि,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रेहवैया हैं ॥



भारत

गाया

जीवन की मस्ती मेरे देस की सी कहूँ नाँय,
हँसत खिलत जन काम के करैया हँ ।
मेले, जात, व्याहुले, बरात कहूँ ऐसे नाँय,
निज निज काम करि चक्क के छनैयाँ हँ ॥
सरत अखाड़े माँहि, खेलत भड्डू कहूँ,
हूलगड़ा, गंदटप्पे गिल्ली के खिलैया हँ ।
उड़त पतंग, कन कीवा कहूँ काटे जात,
हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हँ ॥



जैसी मरजादा, ऊँचे आचरन मेरे देस,
वैसे काहूँ देस माँहि देखे न दिखैया हँ ।
पर धन धूरि, परनारी मैया मानी जाय,
उमरि-बड़े कूँ ल्हारे सीस के झुकैया हँ ॥
बैभव विलास ऊँचाँ पद धन सब तेऊ,
चरित के मान कूँ विसेस मनवैया हँ ।
भैया-बाप गुरु अरु अतिथि काँ मान जायें
हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हँ ॥



कुमी को करम मान्यां जात सवतेऊ ऊँचो,
 सां मे अस्सी जन याई करम करैया है ।
 बाते घाटि मध्यम करम वनिजाई की ऐ,
 बाऊ में वनिज ऊँचे नम के निर्भया है ॥
 मवते अधम काम चाकरी कां कहाँ जात,
 हेटे भागि वारे जन भीख मँगवैया है ।
 गाय बल खेत आं धिरान सां विकास जाकां,
 हम तां रे भैया ! वाई देस के रे हैवैया है ॥



गामन में दीखें मेरे देस को असल रूप,
 करि करि मम स्वेद वारि के वहैया है ॥
 भूमरे के जात घर आनि दीघी वाती करे.
 सोने सी फसल हेर फूले न सभैया है ॥
 नास कूँ अलाव घेर, हँसैं बोलैं हुक्का फेर,
 बाजरे की घीचरी सां व्याह्र में खवैया है ।
 धोटा पं मरद आं अटारी माहि नारि रीझें,
 हम तां रे भैया ! वाई देस के रे हैवैया है ॥



धन्न मन्न दूध कढ़ें, घँमर विलोमें छाचि,
 घी कौ लचकाऊ लै कें चाड़ी में धरेया है ।
 मोट बाँधि बाँधि नाज भरत कुठीला कोठे,
 बुरजी भुसीरा घुप्पा भुस सों भरेया हैं ॥
 फद कूदें, नाल हू उठामें मूँछ ताव दै दै,
 नर नारी रीझि रीझि रसिया गवैया है ।
 भुमिया पै वेलें मंत्र तंत्र गंडा गोठि जामें,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥

मेरे देस माँहि रीझि ईस अवतार लेत,
 हरत कलेस भू के भार उतरैया हैं ।
 पाप घट फोरि, दीयौ धरम कौ जोरि, तोरि,
 तम-तोम, पुन्य कौ पीयूस वरसैया हैं ॥
 सारे भू के देस मेरे देस सों उजास लेत,
 गहत मुज्ञान विस्व गुरु नो कहैया हैं ।
 जापे बलि जात हैं मुरग अपवर्ग दोऊ,
 हम तौ रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥

रच्छन कूँ राम, जन रंजन-हमारे स्याम,
 दसरथ नन्द ये, वो नन्द जू के छैया हैं ।
 ये तो पुरुषोत्तम कहाये मरजाद हेत,
 वे तो नटनागर सनेह साँ रिलैया है ॥
 एक नारी व्रत इन लीयी थापिये कूँ कानि,
 गोपिन के संग वे तो रास के रचैया हैं ।
 जामै अवतार जन रच्छन औ रंजन कूँ,
 हम तो रे भैया ! चाई देस के रूँहैवैया है ॥



हे रे मोरे राम ! मोरे देस पै कृपा की कोर,
 करियी कृपा के निधि ! जग के गुसंया हैं ।
 फूल फल जग में सुनाम यसधाम होवै,
 या साँ सीख लेमें जगती के भैन भैया है ॥
 मय जन सब साँ सनेह सनमान पावै,
 पर उपकार हेत प्रानन दिवैया है ।
 जगती के माथे की तिलक ज्यों सुहावै सदा,
 हम तो रे भैया ! चाई देस के रूँहैवैया है ॥



गाथा

धंमी वारे किसन कन्हैयाँ नंदलाल प्यारे !

आँसू भरि टेरें तोहि हिन्द के बसैया हैं ।

आओ मनमोहना, बजाओ वाँसुरी हू फेरि,

जसुमति छैया लाल नंद के रिझैया हैं ॥

कहा चूक परी, काहे रुठे हो हमारे स्याम,

देख देख वाट दिन राति बिलखैया हैं ।

जामें गज तारे, द्रौपदी की लाज राखी नाथ !

हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ॥



भाव भरे उर सों उतारूँ त्यारी आरती माँ !

प्रानन के तार त्यारे सुरसों बजैया है ॥

माँम साँस माँहि त्यारी सुरभि समाई देवि !

त्यारे अन्न नीर तन मन में समैया हैं ।

जीलें त्यारी अंक में मरे प त्यारी छाँह पाऊँ,

हे री ! जन्मभूमि ! त्यारे नेह सों पगैया हैं ।

जायी रज माँहि धेर बेर जन्म लैन चाही,

हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया हैं ।



दऊँ परिकम्मा ती अनन्त बेर रोझ रोझ,
 जतीपुरा राधाकुंड़ प्राण पुलकैया है ।
 लोटि लोटि जाऊँ दिव्यता सों सनी रज माँहि,
 मुर मुरपति धाम पग ठुकरैया है ॥
 हे रे ! जगदीस त्यारे अनँत निहोरे खाँड,
 जनम जनम प्राण ब्रज के बसैया हैं ।
 गोरधन चहुँ ओर, मानसीगंगा की नीर,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



धनि धनि जनम की भूमि तो पै बलि जाऊँ,
 माँम साँस छिन छिन लेत यों बलैया है ।
 बनूँ चाहे पमू नर पंछी औ पतंगा कीट,
 चाह मोरे प्राण सदाँ हिन्द के बसैया है ॥
 खाऊँ फल फूल न्हाऊँ गंग जमुना के नीर,
 अधर मदाँई दधि दूध के पित्रैया है ।
 बन्नीनाथ कासी सेतुवद जैसे धाम जामें,
 हम ती रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥



मोरे उर माँहि आन चाह कोऊ बची नाँय,
 साँची चाह रही जासों प्रान हुलसैया है ।
 पावों ही जनम बेरि बेरि जमुना के कूल,
 सघन निकुंज ओ कदम्ब तरु छैया है ॥
 झाँमरे करीर अरु सीरी घन छाँव मंत्रु,
 वाँसुरी बजामते सुधेनु चरवैया है ।
 जाके उर माँझ ब्रज मडल सुहात नीकी,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया है ॥



तीन लोक सोंह न्यारी मथुरा के ओर पास,
 विन्दावन, गोकुल अनन्त छवि छैया है ।
 नन्दगाम, दाऊजी, रमणरेती हेर हेर,
 साँबरे कन्हवाई की सुरति सरसैया है ॥
 बरसाने जाय सुधि लाड़िली की उर माँहि,
 ग्वाल बाल संग तत्र सुधि विमरैया है ।
 जामें गिरिराज लौठा पोछरी, को जै जै कार,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहवैया है ॥



॥ भारत ॥

गाथा ॥

दऊँ परिकम्भा तौ अनन्त वेर रोझ रोझ,
जनीपुरा राधाकुंड प्राण पुलकैया हैं ।
लोटि लोटि जाऊँ दिव्यता सों सनी रज माँहि,
मुर मुरपति धाम पग ठुकरैया है ॥
हे रे ! जगदीस त्यारे अनैत निहोरे खाँड,
जनम जनम प्राण ब्रज के बसीया हैं ।
गोरधन चहुँ ओर, मानसीगंगा की नीर,
हम तौ रे भैया ! बाई देस के रूँहैया है ॥



धनि धनि जनम की भूमि तो पै बलि जाऊँ,
साँग साँस छिन छिन लेत यों बलीया है ।
बनूँ चाहे पमू नर पंछी औ पतंगा कीट,
चाह मोरे प्राण सदाँ हिन्द के बसीया हैं ॥
खाऊँ फल फूल न्हाऊँ गंग जमुना के नीर,
अधर मदाँई दधि दूध के पिरीया है ।
बद्रीनाथ कागी सेतुबंद जैसे धाम जामें,
हम तौ रे भैया ! बाई देस के रूँहैया है ॥



मुनि मोरी मीया ! हाथ गंगजल धारि कही,
 मोरे तन मन त्यारे मान के बढ़ैया है ।
 त्यारे जस हेत बलि देउं तन-मन-धन,
 सीस कटि जाय परि कीर्ति ना नसैया हैं ॥
 जगती में गूँजे नाम हिन्द को अनिन्द्य मजु,
 जगत गुरु को पद पाय हुलसैया है ।
 मोने की चिरैया दधि दूध की सरित वहेँ,
 हम तो रे भैया ! वाई देस के रूँहैया है ॥

धनि जीवन ! धनि लेखनी !!, जनम भूमि जस गाय ।
 मजल नैन पुलकित बदन, मनुआँ अति हरसाय ॥
 × × ×
 हिमगिरि मंजुल भुकुट सिर, गग जमुन सुचि माल ।
 चरन धूरि मिर धारि कें, अम्बुधि भयो निहाल ॥
 × × ×
 पुन्यमयी ममतामयी, हे मैया सिरमौर ।
 कवि के मनुआँ कूँ रुचै, और न कोऊ ठौर ॥
 × × ×
 त्यारी रज में जनम लै, याही रज में अंत ।
 जनम भरन को चक्र ई, चलती रहे अनत ॥

भारत पतन

भारत की महिमा लिखी, धन्य लेखनी तोय ।
पतन लिखित अति पीर सों, आँखर आँसू रोय ॥

× × ×

जाकी पावन भूमि पं, ईस लये औतार ।
सो अब अति कलुसित भई, दनुज भये साकार ॥

× × ×

सोने की चिरिया बनी, दूध दही सर पूर ।
वाकों अब जाचक कहें, और देम मद चूर ॥



× × ×

हे भैया ! पावन मही ! तीन लोक सिरमौर !
उच्च सिखर सों पतित ह्वै तिलफत परी कुठौर !!

× × ×

कवि के हियरा अति ठूक उठै, अँखियाँ भरि है असुआँ झरि है ।
सिरमौर हतीं सब देसन की, कभूँ जानी न बात इतीं गिरि है ॥
जन याके कहे सुर जावत हे, अब गत अधोगति के परि है ।
कब तानूँ कहो ब्रजराज हमार बुरे दिन के बदरा टरि हैं ?

रामकृष्ण



मनुआँ की पीर

भारत-महिमा लिखिकें लेखनी धन्य भई ! परि वाकूँ भारत-पतन लिखिबे कूँ हूँ विवस होंनों पर्यो । देगिकें अनदेखी कैसें करी जाय ? जो देन अतीत काल के माँहि मुरनोक सों हूँ बढ़िकें पुन्य धाम ही, वूँ जा ममै माँहि पतन के आँड़े गतँ माँहि पर्यो तिलफि रह्योये । देस के जीवन के मवई छेत्रन माँहि भारी पतन भयो ऐ । कितहूँ काऊ तरियाँ काँ धरम-करम अरुमान-मर्यादा काँ नैकऊ भाव-शुकाव नाँय दीखँ । जितँ देखीं वितँटँ मर्यादा हीनता, अवमूल्यन, गिरावट, भ्रस्टाचार, असत्य अरु धोखेवाजी काँ बाजार गरम है । नैक निगाह चूकी काँ माल यारन काँ । कुहूँ काऊने काऊ काँ नैकऊ धिसदान करयो, काँ बाकी वेड़ा गरक भयो । काऊ छेत्र माँहि ना तो कर्तव्य की भावना रही, नाँ काऊको डर या लिहाज रह्यो-जपितु निलज्जता मानों मुभाव बनि गई ऐ । घूस, सिफारिन, बेईमानी, पच्छपात, भाई भतीजा बाद, लाल फीता माही, मिलावट, झांसेवाजी, ये ताँ अत्र कोऊ अचंभे की बातई नाँय । इनसे कोट नैकऊ नाँय चूकँ और ना चाँकँ ! इनकूँ ताँ हरेक भारत वासी मानसिक रूप सों तैयार दीखँ और कोऊ आपत्ति नाँय करँ । देन ग्रामीन नें अपनी मौलिकता ताँ खोय दई ऐ अब तो ये विदेशी नकल करिबे मेंई सान ममज्ञें । खानपान, ओढ़नों-नैरनों सब दिगगि गयो ऐ । घरन में पूजा पाठ अरु हरि नाम के मुमरन को कोऊ बातावरन ताँ वहूँ दीखँ नाँय, चल चित्रन के भोड़े कलाहीन, भावहीन अरु मूल्यहीन गाने गवते सुने जाँय । यगीचीन में न्हाय धोयकें पहलवान जोर करते दीयें,

रौ ५६
५७

चीपाल अरु थार्डिन पै जोट जुरें । ना कहूँ नारीन के कोकिल कंठन सों
 गीत-गारी सुनाई परें, और ना कहूँ कया-कीरतन ही होंते दोखें ।
 सब छेत्रन माँहि देस कूँ काठ सौ मारि गयाय । ल्हारे-ल्हारे छोरा
 छापरे वीड सिगरेट पीमते दीखें । गली, बजार, नुककड़न पै सीटी
 बजामते अरु भेने बेटीन माँऊ गलत इसारे करते करते या कछू
 भाँड़ी बात कहते या फिसर फिसर बदतमीजी सों हँसते खिस्यानतें
 से दीखे । विन की तन्दुरुस्तीयँ देखिकें ताँ तरस आवै । काहे कूँ
 भूँतारी ने कूँखि विगारीयँ इन्ने जायवे कूँ ? का आसा है सक
 इनसों देस के ताँई ?

सिच्छन सस्थानन माँहि देस के भावी नागरिक बन्या करें 'परि
 आजु की दसा देखि के तो भाथी भन्नायवे लागि जाय । बनाये जाय
 रहे हैं के विगारे जाय रहे है ? स्याति विगारि ज्यादा रहे हैं विन वे
 सों तो । फेरि कहा वनेंगी या देस की आगे चलि कें ? भ्रस्ट राजनेता,
 भ्रस्ट अधिकारी, भ्रस्ट व्यापारी, पतित सिच्छक, भ्रमित जनता अरु
 विगरती भावी मंतति.....प्रभु ही पार लगाय सके या देस की
 लखराती नैया कूँ !

'भारत-महिमा मेरे मनुआँ की हुलास ही अरु भारत-पतन मेरे
 उर को रुदन है । सवन सों इतैकई कहनों है, कछू है सकै तो करी ।
 बूड़ती नैया कूँ बचाओ ।

रामकृष्ण

दधि दूध के निरंतर भैते जहाँ,
 म्हाँई मद्य के प्याले पै प्याले पियें ।
 जहाँ नारी सती नर नेम श्रती,
 म्हाँई वैस्या विदूसक भाँड़ जियें ॥
 जहाँ वात के कारन प्रान दये,
 म्हाँई वात झुँठात सिहात हियें ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयी ?
 ऐसे हालों में सज्जन कैसे जियें ?



जहाँ मन्दिर झालर संख वजे,
 म्हाँई नारि -पराई के संग नचें ।
 जहाँ मंत्र सुकाव्य रिसीन रचे,
 म्हाँई काम विलोभन वानी रचें ॥
 जहाँ दूध दही घृत भोग भखे,
 म्हाँई आमिस कुक्कुट मच्छ पचें ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयी,
 ऐसे हालों में सज्जन कैसे जियें ?

जहाँ होम हुते म्हाँई चडू फुकें,
 जहाँ दान दये म्हाँई जेव कटें ।
 जहाँ मँया तो मँया समान पुजो,
 वा भूमि पै निसि दिन घेनु कटे ॥
 जन पालक जाके भूपाल हते,
 याके नेता सुनीति ते दूरि हटें ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयाँ,
 ऐसे हालों में मज्जन कैसे डटे ?



जाकी भूमि पै कान्हा ने रास रचे,
 वाई भूमि पै राकस त्रास करें ।
 जहाँ राम नें रामन मारि दये,
 म्हाँई रामन निर्भय त्राम करे ॥
 जहाँ त्हाँरे वडेन के आगे झुके,
 म्हाँई आजु निलज्ज ह्वै हास करें ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयाँ,
 ऐसे हालों में सज्जन कैसे करें ?



जहाँ कृस्न सुदामा से भीत भये,
 म्हाँई स्वारथ हेत मितार्ई तजै ।
 जहाँ औध को राज खड़ाऊँ कर्यौ,
 म्हाँई सत्ता की दौड़ में अंधे भजै ॥
 जाकी भूमि पै पद्मिन नारि सजै,
 वार्ई भूमि पै नारि छिनारि सजै ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयो,
 ऐसे हालों में सज्जन कसैं रजै ?



काऊ साँच के देखन की हचि ना,
 व्यभिचार के वारि के बीच वहाँ ।
 सब जीवित माँखी कूँ लील रहे,
 जिन देखी तेई दृग भींच रहैं ॥
 सबरे जन कीच उछारत हैं,
 इक दूजी पै दाँतन भींच रहैं ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयो,
 ऐसे हालों को सज्जन वंसै सहै ?



जहाँ मान गुनी कूँ सदाई मिल्यो,
 म्हाँई दुर्जन देस पै छाय रहे ।
 जहाँ आन की लीक न छोरी कहै,
 म्हाँई आजु वने कूँ मिटाय रहे ॥
 जाकी भूमि पै तिगुन वाय वही,
 वाई भूमिप अंधड़ आय रहे ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयौ ?
 तोरे रच्छक ही तोय खाय रहे ॥

जहाँ राम नें रच्छन काज करे,
 जहाँ कान्ह नें रंजन रास रचे ।
 जहाँ सीता नें मूक ह्वँ त्याग करे,
 जहाँ राधा के नेह सों प्राण तचे ॥
 जहाँ औध की राज खड़ाऊँ कर्यौ,
 दुरन्याव सों राजहू नाँय जचे ।
 हे रे देस मोरे तोय काह भयौ,
 अब कोइ ना ऐसे कहै ही वचे ॥

अब विप्रन की कष्ट वात कहै,
 उर घीच में हूक सी जागत है ।
 जिन विद्या तपस्या सों मंत्र रचे,
 विनकी मन भोग में लागत है ॥
 अब अर्थ ओ सत्ता कूँ दारि रहे,
 जाहै देखा वही कहै भागत है ।
 जाकी ब्रह्म मुग्धा सों पग्यी मन हों,
 क्यों माया सों तन मन पागत है ?

जिनके पग राज भुआल परे,
 वे ई सासक के पग घूमि रहे ।
 जिन विस्नु के वक्ष पै लात दई,
 वे ई विस्नु-प्रिया-मद भूमि रहे ॥
 जिन ज्ञान प्रकार सों विस्व भर्यो,
 वे विदेस में सिच्छा कूँ घूमि रहे ।
 अब विप्रन की ई विहाल भयो,
 अब कैसेँ मुरच्छित्त भूमि रहे ॥

अब चेतों समाज के सीस तुम्हीं,
 तुम सों ही तो विस्व नें ज्ञान लयी ॥
 तुम और जगाय कें सोय रहे,
 कहां गौरव ज्ञान की भान गयी ?
 अब भूमि ई जात रसातल कूँ,
 चहुँ ओर सों पाप की साप छयाँ ।
 हे भूमि के रच्छक विभ्र-समाज !
 अजहूँ नहीं जागत काह भयी ?



अब बात करों कछु छत्रिन सों,
 भुज बेई समाज के रच्छन कों ।
 कित वीरता साहस, छाँड़ि दये,
 ब्रत लिन्ही समाज के भच्छन कों ॥
 तुम पीछे दुरे, नहीं आगे बढ़े,
 काहे सासन सौप्यो अलच्छन कों ?
 व्यभिचार के वारि में देस गिर्यो,
 औ घिर्यो दल हिंसक मच्छन कों ॥



तुम नौ नही देन को रच्छा होय,

रही बिडुआ पर हयन खूरी ।

सुनारि के जेस नै मेज दै जाल

दिनाल को चाह करौ नित पूरी ॥

दुखेन को होय दिनाल तौ होय,

रहै नही भोग को चाह अखूरी ।

तुम नौ नल पाहन ही जनती,

जननी क्यों नाहक देह बिडूरी ॥



अब ब्रह्मण की कछु हाल लग्यौ,

येतौ पेट समाज के जाल ११ ।

जिन मन्दिर दान औ पुण्य भते,

तिन पाप कभाई के ताले भते ॥

सुग्र सूँठ मिलावट भोगीभरी,

कम तोलि के भानी भलीभारी ।

कोऊ साँच कहै तौ धुनी भागि गी,

धिक्कैये कभी क' जो तालि १२



कृसि कर्म जो दौंस्यन कूँ फलती,
 अब छाँड़ि दयो, पसु पालन हू ।
 बनिजाई की नीति अनीति भई,
 धन लूटि रहे दुरचालन हू ॥
 द्विज धेनु कूँ दमड़ी हू ना खरचें,
 नाहि ध्यान सुवालन लालन हू ।
 अब छाँड़ि के होंम सुधर्म कथा,
 रुचि कर्म कटू कलि कालन हू ॥



चरन ममाज माँहि पगन काँ काम कर्यो,
 जानें सदाँ ढोयोँ है समाज तन-भार की ।
 बाकी ओर नैक हू जो डीठ डारि देख लेहु,
 सेवाभाव छाँड़ि रूप धार्योँ अहंकार की ॥
 काहू की न कानि, मान काहू कौ न कर्योँ जात,
 आचरनहीन रूप धर्योँ व्यभिचार की ।
 हाथ मोरे देस त्यारे हाल पै तरस आवै,
 आजु तू बन्योँ ऐ केन्द्र भारी अनाचार की ॥



सीन साँच आचरन धरम करम सब,
 बूढ़ि गये ये तीं सत्ता वित्त के संघर्ष में ।
 नंगे ढ़ाँ के नाच सब करि रहे चहुँ ओर,
 बूड़े जन देस-द्रोह दानवी अमर्स में ॥
 प्रजातंत्र आयी याकौ स्वागत करत कवि,
 हेर कें तिरंगा हम झूमें भारी हर्ष में ।
 पिन्नु जो अन्धेर आपापूती स्वार्थ परता ऐ,
 वासों गिर्यौ जात देस गत्त दुर्घर्ष में ॥



नेता सद्द भयौ पर्यायवाची गर्दभ कौ,
 होतीं जो प्रयोग वापू नेहरू औ सुभाष को ।
 खुले आम कुर्सी की लराई चहुँ ओर ठनी,
 जीतते चुनाव घर भरिवे की आस को ॥
 देस जाय भाड़ माँहि, जन गिरें कुआ माँहि,
 नाँहि कोऊ ध्यान दूरि या कि आस पास को ।
 ई ली भई घेर जो चौपाये न बनाये ईस,
 ये ती चरि जाते सब सूखी हरी घास को ॥



देखी नेंक दीठ कूँ उठाओ निज देस माँहि,
 हते जो सुधाम वे कुधाम अब पाप के ।
 जहाँ कभूँ मुनि जन जाप कर्यो राम नाम,
 वे ई वने धाम काम कोहन प्रलाप के ॥
 पायी वरदान जिन तीरथ सुईसन सों,
 भ्हाँई वकें वचन अहरनिसि साप के ।
 वाप अब रह्यो नाँय बेटा कौ हितैसी कहूँ,
 बेटा रहे नाँय ह्याँ हितैसी निज वाप के ॥



मन्दिरन माँहि अब मद्यप निवास करे,
 देवन के धाम ह्याँ सने है व्यभिचार सों ।
 पंडा औ पुजारी औ महन्त मठाधीस सब,
 युगला भगत भरें पेट अनाचार सों ॥
 धन के गुलाम, नाँय स्वाभिमान काऊ माँहि,
 दूरि भये जात भक्ति भाव के विचार सों ।
 दान दच्छिना कौ रूप लूट पाट भयो आजु,
 कोऊ न लखत सूधी साँची सदाचार सों ॥



तीर्थं धाम कभूँ रिसीगन तपे तप भारे,
 वेद यानी गूँजी मंत्र रचे ब्रह्मभाव सों ।
 आतम उवरि परमातम सों एक भये,
 मर्त्यलोक छाँड़ि ब्रह्म लोक गये चाव सों ॥
 ग्यानी लह्याँ ग्यान औ भगत भक्ति सुधापान,
 सबके भले कूँ कर्म कर्यौ सद्भाव सों ।
 कोऊ जीव रोवयो गयो सुरग के द्वार कभूँ,
 वाऊ कूँ सुरग लीन्हों निज के प्रभाव सों ॥



वाई देम माँहि आजु तीरथ अकारथ ह्वै,
 ढाँग औ ढकोसलों के वने यों कुधाम है,
 जात जो थदालु तिन्हें लूटत ह्वै खुले आम,
 नाम लँ धरम की उधेरें तन चाम है ॥
 पंड़ागीरी भयो व्यवसाय भीख माँगन कौ,
 चोरी सीना जोरी हिंसा हत्या खुले आम है ।
 अय जाय कोऊ कष्ट लाभ न उठात म्हों पै,
 उल्टे भये काम यस वचे कोड़े ॥



मन्दिर में जाँय तौऊ समै कूँ गमामें जन,
 भीर भँगतान की करन फोरि देत है ।
 लाओ माई, देओ वावा, हाय-हाय काँय-काँय,
 नेक आगे वडे ती पन्हैयाँ चोरि लेत है ॥
 भीतर जो पौचे ती घनेरे जेव कटू मिले,
 तवे वे पराई नारि धक्का मुक्का देत हैं ।
 ध्यान धर्म मोक्ष की करौगे कैसे ऐसी ठौर,
 ह्याँ ती अर्थ काम सों लगाये सब हेत है ॥



पन्थर की प्रतिभा सों देव अब दूरि गये,
 काहे कूँ झुकात माथ ढोंगीन के ढेर में ।
 कौऊ नाँय ग्यानी और भगत अब कौऊ नाँय,
 सब जन फँसे है निन्यानमें के फेर में ॥
 जाकी लगें दाव बूई आँटा गोड़ी डारि देत,
 देत है पछारि, चूके नाँय निज ढेर में ।
 बुगन्ना भगत लील जाँय भीन मच्छन कूँ,
 छोरे नाँय काऊ कूँ ये देर या अवेर में ॥



देखाँ गऊसालान में चन्दा की रकम जोरि,
 धेनु की ठठरीन पै भारी ठाट वाट हैं ।
 आप तो उड़ामें माल, धेनु डकरायँ भूखी,
 ओढ़ते जो टाट तिन रेसम के पाट हैं ॥
 चन्दा है कलपतरु कलजुग माँहि मीत !
 कलिदेव के ती वरदान ये विराट हैं ।
 कौने वचें मीन कलजुग के या नीर माँहि,
 ह्याँ ती भारे मच्छीमार धिरे घाट घाट है ॥



दिद्या जाकी काम अँधियारे में उजारी हौव,
 बाके करतव ताँ भारत में देख लेओ ।
 और सब काम, पै पटाई की ती नाम नाँव,
 पहुँची विद्याधाम आखिन सों देख लेओ ॥
 नाँ ती चट्टा पट्टे, ना पढामें तिन्हें गुरु जन,
 मुफति की आँच वरै, अगा गूव सेक लेओ ।
 गढ़ा भयो हाल हे रे देग ! तू ही विस्व गुरु,
 आज हू नेताँ, भैया ! ध्यान यापै नँक देओ ॥



देखी काऊ विद्यालै में कैसी है घिनोनों रूप,
 चट्टा सिगरेट पीमें गुरून के सामनें ।
 छेड़खानी करें भेन बेटी औ पराई नारि,
 कच्ची है उमरि पै सताये कूर काम नें ॥
 नारेबाजी, हूल हुरदंग हड़ताल करे,
 मति यों विगारी चलचित्र अरु जामनें ।
 कहा करें गुरूजन, पुलिस प्रसासक हू,
 बाप हू डरात निज सुतन के सामने ॥



कैसें सँवरेगी देस, पीढी ई निकम्मी भई,
 नाँय कछू आस या कपूत की जमाति ते ।
 कह्यो मानें नाँय अरु आप कछू जानें नाँय,
 नकल विदेसी, दिन कहें कारी राति ते ॥
 नाँहि मरजाद स्वाभिमान ध्यान हति नाँय,
 लरत बहाने लँ लँ धरम औ जाति के ।
 नाँ तौ ये निभामें नेम राज औ समाज केई,
 नाँ ये माने बात कछू पंचन की पाँति के ॥



जाय औसधालेंन को रूप नेंक देख लेओ,

इनकी तो ध्येय नव जीवन को दान है ।

रोगी हेत होत हैं चिकित्सक तो ईस रूप,

सवन के उर मांहि भारी नेह मान है ॥

बाजु कहा भयी ये तो देवन सां दानव ह्वै,

जन जन उर मांहि मान है न आन है ।

धन लीये बिना उर भाव न दया के रंच,

दयाहीन धन लंबी रुधिर को पान है ॥



आमि जेती औसधि सो बेज खामें हाट मांहि,

पट्टी, पेच, दवा-दारु सब बिक जात हैं ।

एकमरे की प्लेट अरु सुई रुई बोटल हू,

ब्लैंक सां. विकत तऊ कभू ना अघात हैं ॥

ऐसी ऐसी बात जिन कहत हू लाज आवै,

रोटी, दारि, दूध हू के सौदा करे जात हैं ।

इनहू ना लाज आवै, कंसे निरलज्ज भये,

हम तो रे भैया ! सोचि सोचि मरे जात हैं ॥



नेंक दीठ डारी वा विभाग पै जो रच्छा-हेत,
 आरक्षी कहात वाके कंसे बुरे हाल है ।
 ध्येय निरधार्यो जन जन भयहीन होंय,
 किन्तु करतूतन सों दीखें मानों काल है ॥
 दीन की पुकार पहुँचें न काऊ अघि कान,
 उल्टे फँसि जाँय ऐसे फंदा वारे जाल है ।
 दुखी तौ धिघायी करें, दोसी मुक्त मस्त फिरे,
 कोऊ मरें, कोऊ जियें, नेंक ना मलाल है ॥

घूस विना भीतर न जाने देय चाँकीदार,
 चाय बीड़ी, भेंट भाई, पौरी के से नेग है ।
 जाय फँसे भीतर तौ निकरि सकौ ना भार,
 फेरि चाय पानी का हुकम देत बेग हैं ॥
 रपट लिखाओ, डाँट उपट सुनत जाओ,
 मूल दुःख भूलि मन जागत उद्वेग है ।
 इतं कुआ, धितं खाई, जाय तौ कितं कू जाय,
 खाली जेब नोट लगे यारन के नेग है ॥

कहै षोऊ महिला दुख्यारी मजबूर है कें,
 एक बेर फँसे इन फन्दीन के जाल में।
 भाड़ में गयीं वानें पहिलें दुःख पायीं होय,
 अब कहाँ वचै फँसी काल के से गाल में ॥
 सील औ सतीत्व की चिता सी जरै खुले आम,
 हाय हाय गाय डकराय वदहाल में।
 हे रे मोरे देस ! तोरे रच्छक या भच्छक ये,
 बूड़े दिन राति कूर कामी ये कुचाल में ॥



काम अभिभासक को न्याय की सहाय करें,
 देमें न्यायाधीस हूँ सहारौ निज ज्ञान को।
 आजु देखी हाल विपरीत आचरन भये,
 लेमें झूठे केस छाड़ि निज आन वान को ॥
 एकई रह्यौय ध्येय, लूटें धन काऊ भाव,
 दंड फंद छल छय मरें झूठी मान को।
 स्वारथ के हेत चाटुकारिता सों घूरि चाटें,
 हाकिम पटामें छोरि निज स्वाभिमान को ॥



ज्ञान है कानून कौन रंचमात्र, कोरी एँठ,
 लई हैं किताब हू दिखायवे के काम ते ।
 नाय चलै काम जब केसन की आय से तो,
 ते में रिसवत नित हाकिम के नाम ते ॥
 धरम करम घरि दीनों ऊँची ताकन पै,
 नाँह डर मानें ये रहीम ते न राम ते ।
 ये तो माने बात जब खोपरी पै जड़े कोऊ,
 फटी सी पन्हैयाँ कूँ उतारि निज पाम ते ॥



न्यायाधीस न्याय के औतार माने गये सदाँ,
 करी फरियाद जो वाकौ दुःख दूरि कीयो ।
 आजु कहा भयो न्याय-मूर्ति हू अन्याय-करें,
 कागजी न्याय कछू पन्नान पै पूरि दीयो ॥
 जाके संग आये हैं गवाह कलाकंद खाय,
 जिन्नें काऊ तरियाँ धन-लाभ भूरि दीयो ।
 जीते बेई केस डंका चोट मारि मारि सब,
 मूर्छन पै ताब-दँ भारी भगरूर कीयो ॥



भारत

गाथा

न्यायालय की मान मोरे मन में ऊर पूर.

अवमानना की भाव हू ती भारी पाप है ।
परि देख देख हाल कहे विन रहूँ कैसे,
रूप जो दिखत प्रजातत्र माँहि साप है ॥
आमें फरियादी दूरि छेत्रन सों कण्ट पाय,
पैसा खचं होय, छूटे कारज कलाप हैं ।
फैसलौ न होय, तिथि बढे बेर बेर जब,
आखिर दुःखी त्वे घूस दे अपने आप हैं ॥



चेत मोरे देस ! तू ती न्याय की औतार हती,
कहा भयों तोरे माँहि आजु पापाचार है ?
चाहे चपरासी, पेसगार अरु हाकिम हों,
जहाँ देखौ म्हाँई व्याप्त भारी अनाचार है ॥
काहू की न काम होय, न्याय की घुटत नारि,
राति दिना गरम ह्याँ घूस काँ बाजार है ।
मुट्टी जो गरम करे, बाकी झूठ साँच होय,
साँची जन धनहीन डोलत लाचार है ॥



आँधी पीसै कुत्ता खाय, साँची भई वात आजु,
 आँधे वटें रेवड़ी सो अपनेन देत है ।
 लाल फीतासाही, आपाधापी, जातिवाद, वर्ग,
 जितै देखी वितै स्वार्थ साधना सों हेत है ॥
 काऊ कौ विसवास कोऊ करै अनीती होय,
 मानव सों आजु सब बने जिन्द प्रेत है ।
 जाय रह्यौ देस जानें कौन से रसातल कूँ,
 देस बासी सोय रहे, जानें कब चेत हैं ॥



खाइवे कूँ, पीवे कूँ हू सुद्ध कछू रह्यौ नाँय,
 जामें देखौ वामें कछू मेल मिलावट है ।
 नाजन में सत्व नाँय, तत्व नाँय दूध हू में,
 जिस्म में न जोस, नाँ मगज तरावट है ॥
 ना ती पैली व्यारि चलें, मौसम न रहे वैसे,
 निसर्ग के न रंग है, मेह न मावट है ।
 ना ती नर रिझबार, नारि ना रिझामनी हैं,
 सूकरी सी भोटिया, मोट्यार हू खापट है ॥



घ्यी में चरबी की मेल, तेल में कटेरी मिली,
 मिरच में गेरू, धनिये में मिली लीद है ।
 टोरा मिरच में बीज मिले अंडकांकरी के,
 महद में साँफ गुड़, हीग में माँमीद है ॥
 बीज भये संकर, आँ फल फूल फासले से,
 चूक ना व्योपारी, चाहे साँमनी या ईद है ।
 सुद्ध आँ अमुद्ध की रुपी जो रारि देस माँहि,
 चाकी यलिवेदी पै ईमान भाँ सहीद है ॥



देस में कुटुम्ब रूप विकृत भयो है अय,
 त्हीरे जन बड़ेन कूँ मान नाँय देत हैं ।
 हाँत ही विवाह बहू लै कें पूत न्यारे हाँय,
 बूढ़े बड़े जनन कूँ हाल घता देत हैं ॥
 बूढ़त विलास अति फँसन के दास होत,
 धूम्रपान, बलय, चलचित्र माँहि हेत हैं ।
 भूले करतव्य भाव, बूड़े हैं आदसं सब,
 पुरखन हूँ के बाम नाँस ^{बाजरी} ^{दुआँ} ^{देत हैं ॥}



पैलें होते व्याह, भारी धूम धाम रंगराज,
 सब में उछाह को जलधि लहरात ही ।
 महीना पैले सों तैयारी होती चाव भरी,
 आते प्यारे पाहुने सो घर भरि जात ही ॥
 भैन वेटी आतीं लैके वाहिने में माठे गोल,
 पूरी गाम झूमती खुसी सों गीत गात ही ।
 कैसी हती संस्कृति की रंगत उछाह भरी,
 हर्स को अपार पारावार ना समात ही ॥



अब भये व्याह आने दिन के तमासे भौड़े,
 चारि वजें जाओ कन्या लै भाड़े के भौन में ।
 भाड़े के ई पंडित, औ म्हाँई उपहार मिलें,
 भोजन को ठेका देओ बैठ जाओ लौन में ॥
 गीत गारी नेग जोग कछु कोऊ करै नाँय,
 ध्यान दीओ जात नाँय संस्कार सीन में ।
 हरद ना फिटकरी, औ गद्द वहु आ परी,
 भाड़े को लै वाहन किराये के ही भौन में ॥



भारत

गाथा

भोजन जो जीमते सो बैठती ही पांति पूरी,
पातरि गुदोना औ सकोरी में जिमांमते ।
कूल्सी में पानी कोरी करसिया में छेद करि,
डारि के गुकेवड़ा हू ओक सों पिवांमते ॥
भोजन में खीर-पुआ ऊपर मों बूरी घृत,
करिके निहोरे मनुहार सों खवांमते ।
चवक माल घाय गुलकन्द भर्यो पान चावि,
उदर सहलांमते डकार लेते आंमते ॥



अब देखो रूप कैमो भ्लेच्छपन्यां धरि लीयो,
घिल्ल मिल्ल ऊँठ शूँठ बर्फ कह्यो जात है ।
कोऊ लेआं, कोऊ घाओ, एक ही पिलेट मांझि,
मोठी नमकीन पूरी भात साग पात है ॥
रमगुल्ला की चागनी में रायती गडुमडु,
दामें अचार चटनी, साँठ है नमात है ।
दही और तेल सब चागनी भकेल भयो,
दन्यां अंगरेज ! पाय स्वाद लें लें घात है ॥



म्होड़े में ते उछटि कें परत पिलेट मांहि,
 आंगुरी की भाईन में गिचपिच होत है ।
 चिपकत होठ तेज मिरच सों सी सी होय,
 मन में तमस जागै, तन दुत्ति खोत है ॥
 घासलेट जरै वाकी फैलत भुर्रादि भारी,
 मूँड़ चड़ि आवै औ उवाकी मन होत है ।
 कहाँ गये दिन जब खाँड़ खीर माखन हे,
 करि करि सुधि मनुआ ती अब रोत है ॥

धन्य मोरे देस दधि दूध के सरित बहे,
 अब कहा भयो तेरी कंसौ ई कुरूप है ?
 तरसत बाल वृन्द, टकी वारी दूध लावै,
 पत्ता झोकि क्रैसर की पेय ई अनूप है ।
 पोखरा की पानी, कभू मेंढकी हू आय जावै,
 दही जो जमत वाकी भिनभिनों सरूप है ।
 कहाँ जाय देस वासी मिलै सोई लैनी परै,
 इत गिरें खाई और वित्त गिरें कूप है ॥

भारत

गाथा

बेस भूमा भारत की सुघर मुहानी हती,

धोती पै वगलवन्दी सीस पगा मोहते ।
पगम में पानही, ललाट पै तिलक छाप,

बटुक गृहस्थ सुभ बेस मन मोहते ॥
न्हाते नदी कूद सर वापी ओ तड़ाग नीर,

पंचगव्य मर्दन सों तन तेज पोहते ।
पचामृत पीते पूजा पाठ हरिवन्दन सों,

संयम सों वचते कराल काम कोहते ॥



वाट देस मांहि अब बेस हू कुभेस भयो,

लगत हैं जुरे बाजीगर के जमूरे ज्यों ।
बाग बड़े रोछरा से तेल घृत डारत न,

दाढ़ी मूँछ बढ़त कुकुरमुत्ता घूरे ज्यों ॥
दांतुन न करत सो दांत पीरे कारे भये,

उड़त लटूरा ग्रीष्म काल के भभूरे ज्यों ।
कान बेसियान की सौ कुत्ता ओ खुसग्री पैर,

हाट गसी कूचरीन भंमत भटूरे ज्यों ॥



बोड़ी मिगरेट औ सिगार दारू सौक भये,
 लेत न ठडाई, पीमें चाय कौफी कोला हैं ।
 मन्दिर न जाय बलव होटल औ रैस्टोरैन्ट,
 करत पसन्द डिस्को ट्विस्ट रौक रोला हैं ॥
 हिन्दी नांय सीखत न आवै आंग्ल भासा हू ती,
 देखौ जो परीक्षा फल चारों ओर गोला हैं ।
 हिन्दुस्तान में ती पंदा पोसित भये है परि,
 मन सों अंग्रेज रत्ती मांस और तोला हैं ॥



आर्यावर्त की जो मुसांस्कृतिक विसेसता ही,
 एक हू ती रही ना या सतति के खत में ।
 नाती गिने जाय दार्शनिकन के पंथ काऊ,
 ना ती गणना ह्वै सकै याकी काऊ भक्त में ॥
 ना ये भांने जाय निरासक्त औ विरामी त्यागी,
 ना ती इन्हें मानि सकौ भोगी औ आमक्त में ।
 ना ती घोड़ा, ना ये गधा, खच्चर भलेई हौय,
 जायकें परिगे काऊ म्नेनी हो विभवत में ॥



आसक्तिकता की उर पायीं ना विसाल धनों,
 नासक्तिकता की बुद्धि हूँ तो नाँय पाई है ।
 ना तो भावना के धनी, नतरु विचार वृद्ध,
 कला काव्य कौसल की प्रतिभा न आई है ॥
 पायीं ना चरित-धन, सद्व्यवहार नाँय,
 सेवा धर्म भक्तिभाव की न रुचि भाई है ।
 इतनों ही भेद पसु और ऐसे जन माँहि,
 पूँछ सींग नाँहि हरी घास नहीं खाई है ॥



भारत माँहि स्वास्थ्य काँ तो स्तर अतीव ऊँची,
 तन मन स्वस्थ मस्त मुमन मों फूलते ।
 काम करते हे गीत गाते माँजमस्ती भरे,
 खाते पीते आते जाते झूमते औ झूलते ॥
 खान पान मुद्ध तन मुद्ध मन मुद्ध हती,
 दुगुँन जो देखते नगते याहि मूल ले ।
 आजु की या हालत सों तुलना करे जो कवि,
 फटत है उर वेदना के पने मूल ले ॥



आजु देखां युवक औ युवती या प्रौढ वृद्ध,
 सबकीई हाल दीखै अजब बेहाल सी ।
 चन्नत में टांग लचि जाँय मानों गिरे अब,
 मांस हीन तन लखै अस्थि के कंकाल सी ॥
 आँखि फटी फटी दोऊ गाल हू पिचकि रहे,
 खै गोजरे से वार सीस काँ जजाल सी ।
 दीखत है मानों कोऊ प्रेत है मसान माँहि,
 जिन्दगी के वक्ष पै जम्यी ऐ आय काल सी ॥



दीघ परै कोऊ बाल जननी की गोद माँहि,
 सोँक सी है टांग तबला साँ फूल्यी पेट है ।
 साम ना समात, डिवरात ढीढ़ भरी आँखि,
 शुर्यौ सब गात भारी रोग की चपेट है ॥
 दूध ना उरोज तऊ चूसत है रीती खाल,
 भूखी माँत, भूखी तात, मौत की ही भेट है ।
 हाय मेरे देस तेरी संतति बेहाल भई,
 तू हू है बेहाल अब कौन याय भेट है ?



भारत

गाथा

देखो वह वृद्ध, ना तो दीखै, ना चल्याई जाय,
काँनहू ना काम देमें दोलर सरीर है ।
चलत में काँपै लरखरात दोनों टाँगन सों,
साँस हू समात ना दुसह्य तन पीर है ॥
पेट बाँधि बाँधि लै लै कर्ज जो पढ़ायौ पूत,
ह्वै कें अधिकारी भयौ भारी ई बेपीर है ।
पूत करै ऐज वाप भूखी प्यासौ धक्का खाय,
हे रे मोरे देस ! तोरी कैसी तसबीर है ?



भूठी मैया देख कें उठत उर हूक सी है,
नारी है या करुना नें अवतार लीनों है !
नूकी सब देह एक पिंजर है हाड़न कौ,
मौत हू न आवै ईस भारी दुःख दीनों है ॥
झूठे दाँना चाटत विड़ारि काग स्वान वृन्द,
हिन्द तेरे वासीन नें ऐसी हाल कीनों है ।
जामें कभू माता पिता तीर्थन सों बाढि माने,
वाई देस माँहि कैसी रूप ई मलीनों है ॥



जामें दुलहिन कूँ अपार प्यार दीयी जाती,
 चाई देस माँहि अब हत्या करि देत है ।
 पैलें ठहरामें मोल घेटा कूँ नीलाम करे,
 जाही विधि लूट्यां जाय गूब लूटि लेत है ॥
 फेर कस्ट देमें वा पराई जाई बालिका कूँ,
 माता पिता बेचत मकान अरु खेत है ।
 तौऊ तृप्ति होवै ना दहेज के पिसाच की तौ,
 प्रान लै के बालिका के पूर्ण बलि देत है ॥



व्याह मान्यौ गयी संस्कार पूत प्रानन कौ,
 अब बूही भयी लाभ हानि कौ व्योपार है ।
 कोऊ कुल गोत्र संस्कार आदि पूछै नाँय,
 धन कहाँ मिले वस एक ही विचार है ॥
 लज्जाहीनता की कछू सीमा अब दीखै नाँय,
 दोऊ ओर होवै कूट नीति कौ व्योहार है ।
 एक काट छाँट दूजी माँग कूँ बढ़ाती जाय,
 है ई संस्कार ? या ई बोली कौ बाजार है ?



भारत

भाषा

एक घात और कहूँ ध्यान सों समझि लेओ,
पैलें जो ज्योनार होती मन हुलसामनी ।
एक दिन पैलें सब जीमते आनंद पूरि,
नाच रंग राज गाजे बाजे गीत गामनी ॥
अब एक नई रीत चली खूब सब ओर,
नाम दीयी स्वागत जो नई बहू आमनी ।
घूँघट हटाय बहूरानी की प्रदर्शनी में,
कैसी निरलज्जता सों करत उगामनी ॥



कैसे ये जवान अब सीकिया पहलवान,
बुझी बुझी आंखि और बँठे बँठे गाल है ।
सोंक जैसी टांग तिन तंग पतखून पैरें,
उड़नछू कुर्ती कनकौवा के से बाल है ॥
धीड़ी सिगरेट की बुकंदि मुख मांहि आवै,
गुस्ता की सरोट सों सिकुड़ि रहे भाल है ।
हाथ परे देस ! तोय कहा ये निहाल करें,
हनुमान भीम केई देस के ये लाल है ॥



गाली विन वोलें नाँय, चलत में सीटी देयँ,
 छेड़त पराई नारि मजनूँ के रूप है ।
 पढ़िबे में गोल कछू काम काज करें नाँय,
 हाट गली नुककड़ के विना ताज भूप है ॥
 इन्हें सीख दँवाँ जैसं वानरा कूँ वया-सीख,
 लक्ष्यहीन जीवन के मानों मूर्त्त रूप है ।
 धरती के बोझ काऊ जननी नें व्यर्थ जाये,
 मन के मलीन अरु तन के कुरूप हैं ॥



देखी कछू बालिका पढ़ाई हेतु जाय रही,
 देख देख हाल मेरी माथ झुकयो लाज सों ।
 तंग परिधान माँहि अंग अंग दीख रहे,
 सिंगरी नारीत्व ढकयो मदं जैसे साज सों ॥
 हल्ला सौ मचात, दाँत फारती धुलकती सी,
 लगेँ अकुलीन निर्लज्ज सी आवाज सों ।
 हाय मेरे देस ! जहाँ सीता औ सावित्री भई,
 वाई देस माँहि ऐसी बालिका को काज सों ?



मोरे देस माहि सती सांडिली सावित्री भई,
 ईस हू ते वाढि जिन जान्यां निज नर को ।
 तजिवे की यात ती मुपन हू में सोची नाहि,
 चरित के बल पायी ईस हू के वर को ॥
 आजु वाई देस में विवाह का विच्छेद करें,
 कलह का वनामें केन्द्र अपनेई घर को ।
 नारी मेरे देस की विदेमी चाल चलि रही,
 नर कूँतां दीयां रूप निज अनुचर को ॥



कैसी कलजुग मोरे देस में ही टूटि पर्यी,
 मैया सों ती मम्मी कहें, डंडी पापा चाप सों ।
 चाची ताई भुआ माई सवन सों अंटी कहें,
 नरन को गडुमडु अंकिल आलाप सों ॥
 गुड़ मोरनिंग गुड़ नाइट औ सौरी ओ० के०,
 वने अंगरेज थैक यू के ही प्रनाप सों ।
 निज भासा संस्कृति औ धरम गुडायी सब,
 कैसे उबरंगी मेरी देस ऐसे पाप गों ॥



सिमून के नाम धरे टिकू पिकू वन्टी डौली,
 भेजे सिच्छा पाइवे कू मौड़िल स्कूल में ।
 अंग्रेजी चार नैक टाई हैट बूट सूट,
 अंग्रेजी कल्चर जमामें उर मूल में ॥
 ब्रेक फास्ट करें, लच लेवै औ डिनर खाँय,
 पैन्हें कांस्ट्यूम जामें स्विमिंग कू पूल में ।
 फेर कैसें बालक वनेंगौ सच्चो भारतीय,
 आमन के फल कैसें लगिगे बबूल में ॥



औग्न हू देखी मम वनो बौव कट चार,
 स्लीबलैस ब्लाउज में काँख चमकत हैं ।
 चाँड़े नाँचे कट में उरोज आवे दीख रहे,
 उदर ताँ पूरे उधरेई दमकत है ॥
 पीठ दीखै, कटि दीखै, जंघा जानु पिडली हू,
 झीने तंग वस्त्र में नितम्ब छमकत है ।
 हे री भट्टू ! काहे कू इतेक हू टके हैं तन,
 नग्न है कें डोले ताँ का हम पे रकत है ॥



भारत

गाथा

औरत हू पीमें सिगरेट, कलव नृत्य करे,
पर पुरसन संग टिक हू बन्द है।
नाइट कलव जाय, खेलें त्रिज रमी पलाय हू,
नाचिवे कूँ नर की कन्नि दन्द हू ॥
गाती अब लाज मरजाद कहूँ रही नन्द,
नतिकता छाँडि दुन्द हू बन्द है।
कैसें लगै पार मोरे देम नोन्दि नन्द हू
मेरी जानि दे दी हू इन्द हू ॥

कैसें कहै वरद गिरा के वरदान इन्हें,

ये ददी फंदी गुटवाज औसरवादी हैं ।

पायी है मुभाव चमगादड़ औ बक ध्यान,

आत्मश्लाघी निदक औ भारे बकवादी है ॥

इनके लिखे ते देस जन कौ न भली कछु,

जायै दृष्टि जाय वाकी करत ववादी हैं ।

नयी नयी कहें टरं टरं बोलें दादुरज्यों,

चिर सत्य जानें नहीं, मौसमी मुनादी हैं ॥



पत्रकार नाय पहिले जैसे मर्यादावान,

नाती प्रतिभा है अरु नाहिन आदर्स हैं ।

कोऊ छपवावे सोई छापि देत धन हेत,

ब्लैक मेल करिवे कूँ छेरत संघर्स है ॥

ना तो स्वाभिमान अरु स्वस्थ ना समीक्षा करें,

सद्भावना कूँ छोरि पालत अमर्स हैं ।

गिर गयो स्तर सब भाँति पत्रकारिता को,

स्वार्थपरता के मान दंड दुरधर्स है ॥



भिच्छुक हू भये अब जेवकट चोर डाकू,
 भिच्छला को तो नाम अब ऊपरी वहानों है ।
 कोऊ भये तस्कर उड़ात कोऊ सिमु वृन्द,
 कोऊ ज्ञासी देत सोने चाँदी कूँ उडानों है ॥
 भीष मांगि कंऊ पीवत सराव और,
 काऊ भांग गाँजों सुलफा को रस आनों है ।
 ह्वै कें आप भिच्छुक तरेरें आँखि दाता पै ई,
 हाथ भगवान जाने कँसौ ई जमानों है ?



साधून कूँ देखी बे तो पूरे स्वाद भोगी नर,
 संत को तो चून ग्यामें वावा हू कहामें हूँ ।
 चेली करि राघें जुवतीन कूँ विलास हेत,
 सुलभ गृहस्थ कूँ ना, ऐसे मुख पामें है ॥
 तकि जाय दिन माँहि, राति कूँ समटी करें,
 द्योग औ ढकोसले सां भूरख वनामें हूँ ।
 ना तो तप, ग्यान औ ना आचरन तेज बल,
 मुरग सो धरा कूँ हूँ नरक वनामें हूँ ॥



धरम कौ रूप ती विकरत पतित ऐसी,
 भये धर्मान्ध साम्प्रदायिक दुरभाव सों ।
 हिन्दू औ मुसलमान सिक्ख जैन पारसी हू,
 एक दूसरे की निन्दा करें भारी चाव सौ ॥
 हिंसा अत्याचार रक्तपात औ विनास भारी,
 धर्म रीतौ होंत जाय सगुण अभाव सों ।
 चेनी भारतीय निज स्वर्णिम अतीत हेरि,
 धर्म कौ उत्थोन होवें सच्चे सद्भाव सों ॥



भारत के वैभव समृद्धि के प्रतीक चिन्ह,
 क्षये जात दिनकाँ ध्यान कोऊ करे नाँय ।
 बड़े बड़े मन्दिर जो धर्म औ कला के धाम,
 रच्छन अभाव में जीर्ण सीर्ण भये जाँय ॥
 अजन्ता ऐलोरा जैसी भव्य औ विसाल गुफा,
 बड़े बड़े दुर्ग गढी कोट हू क्षये जाँय ।
 कोऊ न करत एत रच्छन उपाय कछू,
 देस की महानता के स्तंभ हू ढये जाँय ॥



भारत

गाथा

कवि-उर में ती पीर हूक सी उठत नित,
कहा पेरे देस कां वनेंगी भावी काल में ?
पीढी है निकम्मी जुम्मेदारी निज जाने नांय,
रह्यां नांय तेज बूढे युवा अरु बाल में ॥
बूढे तो चिपकि रहे रुडि मृत मान्यतान,
युवा फँसे परे हँ विदेसी भ्रम जाल में ।
बाल वृन्द दिसाहीन सिच्छा ध्येयहीन मिलै,
दीखें परिनाम राष्ट्र पर्यां बुरे हाल में ॥



उच्चतम् नेता हू भये ऐं जब भारी भिस्ट,
जनता तो बिनकेई पंथ कूँ गहत है ।
यथा राजा तथा प्रजा सत्य ई कहायत है,
करैगी कुकर्म जो कुकर्म कूँ सहत है ॥
जल जैसे ऊपर न जात नीचे कूँई बहै,
वाई त्रिधि भिस्टाचार नीचे कूँ बहत है ।
ऐसी कुव्यवस्था तो मिटत जब हारि हूरि,
दुःखी है कें जनता विद्रोह माँ दहत है ॥



सतोगुन रह्यो नांय तम को प्रभाव बढ़्यो,
 खान पान चिन्तन विनास के ई दूत है ।
 बढ़्यो मान धन पद और गुंड़ागीरी वानि,
 विलखि रहे हैं जो कलंकहीन पूत हैं ॥
 ऐसीई अधर्म ती कीयी कौरव हू ने नांय,
 आजु वासों वढ़ि कें सराव और द्यूत हैं ।
 वृद्धि रही नाव मेरे देस की ती रेत मांहि,
 दीखें ना सपूत, एक लंग सों कपूत है ॥



कहा करौ पार जब नाव कूँ बुडाबै जानि,
 नाविक ही जाके हाय पतवार दीनी है ।
 बू ही घात करै जाकी गोद में विस्वास करि,
 प्रानन बचाइवे कूँ आ सरन लीनी है ॥
 जासों दबा मांगी रोग दूरि करिबे के तांई,
 बानें पुरिया में वांधि विस बेल दीनी है ।
 गैर सो तो बचि जाय जैसें तैसे चाल चलि,
 अब न बचेंगे अपनों ने घात कीनी है ॥



अपहरण करें वायुयान सस्त्र जोर सों,
 दृष्टा सों हिलाय देमें मानुस के धर्म को ।
 छटे रेल कार बस ट्रक बैक राहगीर,
 मृदा धातु हेत करें हत्यारे के कर्म को ॥
 वह बेटी संग बलात्कार से कुकृत्य होंय,
 चलत कुचाल छाँड़ि कानि कुल मर्म को ।
 तुलनी बर्यान्यों निज 'मानस' मे कलिकाल,
 हेरि हेरि हिया में समुद्रि रहे मर्म को ॥



श्रवण कुमार के या देस माँहि देखी हाल,
 मँया बाप भीख माँगि बेटा लाट साथ है ।
 धीरेन में धूरि टारें काऊ की ना कानि कहै,
 धता दें पुराने कूँ नये की ऐसी चाव है ॥
 काऊ पै तो भीन जो जिराये ते जिरत नाँय,
 काऊ पै तो मूलभूत वस्तू की अभाव है ।
 काऊ की टिनन जाय कोऊ जोरे छीन छीन,
 चहुँ ओर छापी कलिकाल की प्रभाव है ॥



गामन में दीखती असलि रूप हिन्द की जो,
 छाँड़ि के निसाँक नगरीय रूप धार्यो है ।
 मस्ती जिन्दगी की कहै रही नाँय नैकसीऊ,
 बढ़त तनाव जग जीवन बिग्यारी है ॥
 ऐसी लगै दौरि रहे जाने कहाँ जनजूथ,
 कोऊ काऊ की न मुने कछु ना विच्यारी है ।
 भारी भीर हू में जन लगत अकेली साँई,
 गाँम के रूँहैवैया हू शहर रूप धार्यो है ॥



पैले से त्योहार तीज मेले ठेले रहे नाँय,
 जीवन की मस्ती हू बिलाई छल छद में ।
 दौरि रहे जन काऊ अंग्रड़ के संग मानों,
 स्वयं की हू मुधि नाँय फँसे दंद फद में ॥
 ना तो कोऊ ध्येय मानों भँवर फँसी है नाव,
 खिचे जामें काल चक्र गति हू अमद में ।
 लोक में न मुख परलोक की ह्यास नाँय,
 कोल्हू काँ सौ बैल घूमें काऊ गुफा वंद में ॥



यत्र युग ऐसी जामें मानव हू यत्र भयो,
 चाकर विज्ञान आजु स्वामी रूप धार्यो है ।
 पंनं संवा करत ही, आजु तू आदेम देत,
 आग्नेय अस्त्र सान्ति मुख हू सहार्यो है ॥
 जन जन उर मांहि उपज्यो है अविम्बास,
 हर्यो भर्यो वाग जाकी आगि नें पज्यारो है ।
 प्रगति विकास दुरो नांहि लग काऊ कू हू,
 परि याके नाम मों ह्या वने कू उज्यारो है ॥



ऐसी कोऊ मिले नांय जाके मन मुख होय,
 सबई असान्त ध्रान्त बलान्त से दीय रहें ।
 सोने के सदन, ऐस भोग मुख साधन हू,
 पीड़ा के अयन में सद्य जन झोक रहें ॥
 भौतिक विकास सग ऊंचे गुन दीयें नांय,
 राति दिना गुनहीन अगुन मोय रहें ।
 पाय कें गुनप्रता नगार्द आम चेतिते की,
 देय देय हाल ये दुदिन ही दीय रहें ॥



पैने नर वात के धनी हे कभू चूकते ना,
 वात हेत आन हेत प्रानन गगामते ।
 अब नर नारिन सों गये बीते होंत जाय,
 वात कूँ पलटते ना नेंक सकुचामते ॥
 भेंदकी की लात सम बात सों डरना कोऊ,
 पहिया ज्यों लड़े कौ यों वात कूँ घुमामते ।
 नीति पुरखान की कूँ तोरते मरोरते हू,
 ना तो दीखें दूखते ना नेंक सरमामते ॥



स्यानवीर दानवीर मुद्धवीर होते नर,
 अब झूठवीर है अम्यानी गुनहीन से ।
 बगला मे बने कछू आंखि मीच ध्यान देत,
 जो है कछू दूवरे सों कोर बने मीन से ॥
 कछू झोंपरी में दाने दाने कूँ तरसि रहे,
 कछू राति दिना भोग वासना में लीन से ।
 एक ओर मोटे पेट वारे खून चूसि रहे,
 दूजी ओर प्रानन की भीख मांगें दीन से ॥



जर्त गये राम जिन रामन से दैत हने,
 कहीं हैं कन्हैया कूर कंस के हनैया ह ?
 तीन अरु तीम कीटि देवता ह दुरे आजु,
 जाने कहीं छुपे जन लाज के वचैया ह ?
 कोऊ गिरै वाय और धक्का सों गिरामें सब,
 आंमू पोछे नांय कोऊ धीर के धरैया ह ।
 मरे कू ही मारें अरु षव की उतारें खाल,
 ना ती कोऊ सुनें नांय न्याय के करैया ह ॥



आंधो पीसै चान्की वाके चूँन कूँ ती स्वान ग्रांय,
 चोर संगी गिरहकट, नो वचि पायगौ ?
 एक धंली के हैं चट्टे बट्टे पड़यंत्रकारी,
 आसतीन को जो स्याप कभूँ डगि जायगौ ॥
 एक पल कूँ जो बिसबास कोऊ —कहूँ कर्यो,
 रोवंगी हमेसा सिर घुनि पछितायगौ ।
 हाव मेरे देस ऐसे हाल में बता तू अव,
 कीन तेरी भूमि पे जनम लंनों चाहेगी ?



रह्यो होंगो कभूँ तू सुरग की सी ग्राम प्यारी,
 आजु ती नरक सों हू वदतर हाल है ।
 जितै देखौ बितै कुआ बाबड़ी के बीच फँसे,
 चहुँ ओर फँसिबै कूँ फैल रह्यो जाल है ॥
 एक सों चतुर दूजों, धोवी गों का तेली घाटि,
 न्हैला पै ती धँला परै जीत काँ सबाल है ।
 बाके हाथ मोंगरा ती बाके हाथ लाठि थमी,
 कोऊ कम नाँय भैया ! बुद्धि की कमाल है ॥



पढिये में तेज तौऊ तब तानूँ अंक नाँहि,
 या ती हो सिफारिस या मुट्टी की गर्म करे ।
 जाँच होय कीपी कहाँ गईं जाँचिये के ताँई,
 बाकूँ भेट भाई दै केँ अंकन नमं करे ॥
 प्रायोगिक मौखिकी के हेत जो पधारें विज्ञ,
 बाकूँ खचायें माल कार की प्रबन्ध करे ।
 इतनों हू नाँय करे बाप कोऊ कैसेँ ढरे,
 कैमी हू मेधावी हो बाकी पार नाँय परे ॥



जाही देस में मान गुनी जन का,
 वाई देस में मान बढ़्या धन की ।
 जामें पूजा के जोग गुरु जन हे,
 वामें आजु महातम दुर्जन की ॥
 चाहे कैसेक दुस्ट लवार कहै,
 यदि ज्ञान है तंत्र के पुरजन की ।
 सूटे सत्ता हथ्याय के ऊँचाँ उठै,
 फेर काम निमंक करे मन की ॥



जानें पायो कट पद ऊँचाँ कहै,
 वाने दुर्गुन लाख दिखे पद में ।
 सूई ज्ञानी गुनी वीं चरित्रबनी,
 वाने कोऊ ना बीन कहै अर्थ में ॥
 चाहे दानव राक्षस दिखे करे,
 यदि जाय अनीदि करे अर्थ में ।
 वानों जूसन हेत करे अर्थ में,
 मु कही वन नोचि अर्थ में ॥



अति भारत रोमन देत नहीं, फिर जाय कहाँ अरु कौन मुनें ?
 कित न्याय मिलै जो विचारे हुये, धनहीन की हालत कौन मुनें ?
 जापै सत्ता है अर्थ हू म्हाई रहै, सब लोग चुनाव में वाय चुनें ।
 कहै ऐसी कँडेरी मिल्यो ना इहाँ, धरि ताँति पं हई सी इन्ने धुनें ॥
 सब भूत भये अब लातन के, मरिहै न कछू अब वातन सों ।
 ये हैं नंग वड़े परमेमुर सों, नही चूके कभू निज घातन सों ॥
 नर मारि कें हाथ हू धोमें नहो, फिर पूजा करें विन हाथन सों ।
 ये तो मारिगे यार निकारि छुरा, कोऊ खाल उतारिहै गातन सों ॥

जिन दाँतन दाने सों बैर परे,
 पुरखा तरमे नित डोंड़ैन कूँ ।
 घेई लाट बने सिर ऊँचो करे,
 नाँय सूधौ करे निज म्हीड़ैन कूँ ॥
 अब मांगत दैन-दहेज घनी,
 लाये व्याहत मुन्दरि भोंड़ैन कूँ ।
 क्री भूमि करे निज श्वान के नाम,
 और दादा बनावत लीड़ैन कूँ ॥

या तो राम सहाय करै तो वनें,
 ना तो बूढ़ी ये बात ई देस गयी ।
 धव पौंच्यो रसातल औंधो पर्यो,
 याके भाग को सूरज अस्त भयो ॥
 जो ही शान पुरातन घूरि दयो,
 पुरखान को गोरव भूल छयो ।
 कवि के उर आरति भूरि भई,
 जो पै चाहत है, नहि जात कह्यो ॥



द्रुपद सुता की लाज जाती सों बचाई स्याम,
 धाये सुनि भारत पुकार गजराज की ।
 राकम बिनासे साधु संत हू उवारे भूरि,
 दौरि आये चित चिन्ता करी जन लाज की ॥
 देघ रहे कहा दसा भई त्यारी पुन्य भू की,
 कौमी विगरी गे याके राज औ ममाज की ।
 आओ प्यारे कान्हू औ बचाओ निज मात कूँ तो,
 सोने की चिरैया बनी कौर अप बाज की ॥



हेरे मेरे राम ! धनु वान धारि आओ दाँरि,
 सीता सम भारत की भू है दैत्य जाल में ।
 रावन ने राकस करत ज्यों अनीति भीति,
 तिलफत भक्त जन परे काल गाल में ॥
 कपट हृदम छल मार काट रक्तपात,
 दीखत अनीति अनयाव चाल ढाल में ।
 कैसे भारता होयगो वैकुण्ठ की परम सुख ?
 देख देख जन्म भू कूँ व्यथित विहाल में ॥



हे रे प्रारे कान्ह ! दाँरे आये गज तारिवे कूँ
 द्रोपदी की लाज हू यचाई वेग आय कें ।
 अघानुन वकासुर पूतना सों रागे जन,
 जहाँ दीन रोये म्हाँई रच्छा कीनी जायकें ॥
 कब्रहूँ न लाज भरजाद खोई त्यारे राज,
 साधू सत सदाचारी रहे सुख पाय के ।
 अय कहा भयी, भैरे भये टेर सुनों नांय,
 कैधों सोये घैरा नीद घुटी भांग खाय कें ?



दीरे आओ नाथ ! ओं वचाय लेओ बूढ़ी नाव,
 त्यारी लीलाधाम हू नरक बन्यो जात है ।
 देव-भूमि भई अब मलिन दनुज-थली,
 साँच गुन धरम सुकरम नसात है ॥
 लीने अवतार लीला धाम जो ललाम भयो,
 वाकी ऐसी दना हेर हियरा दुख्यात है ।
 बूढ़्यो त्यारी देस तोहू नाम त्यारी बूढ़ि जाय,
 देस ई नसात त्यारी जस हू नसात है ॥



जगनाथ भया करिहो इतनी,
 निज भागा कूँ मीरु कें गौरव हो ।
 यह देन वनें वर वाटिका मौ,
 खिलहे नित फूल सुसौरभ हो ॥
 जननी तौं जनें मुत पाँडव से,
 नही काळ की कूँघ ते कौरव हो ।
 ई हिन्द वनें सुरराज कौ धाम,
 अरो-घर घुटि घुटि रौरव हो ॥



भगवान् इतनी वीनती कवि-प्रान की सुनि लीजियो ।
 ई जनम भू प्यारी जननि, सुघधाम हो वर दीजियो ॥
 सतान सब मिलिके रहें, प्रभु आ सरन में लीजियो ।
 दुख नीर-निधि में बूढ़ते हत देस कू बल दीजियो ॥



भगवान् निसि दिन हिन्द में सद्भाव के सोते बहें ।
 नित गान गाते अरु विहँसते, जो मिलै, उसको गहें ॥
 हमसों कहूँ कोऊ कहै कष्टु पै कटुक हम ना कहें ।
 विस्व उपवन के सुमन हों नेह सों हिलमिल रहें ॥



१२२

भारत

गाया ।

हे ईम ई भारत पतन उन्नति वनें औ बड़ चनें ।
उन्धान के सोपान नित प्रति वीरता संग चढ चले ॥
हम लक्ष्य को पा जाय अरु दुस्मन हमारे कर मले ।
गुधि जन्म भू के जक में गद्भाव गों सब जन पले ॥

●

प्राचीन में जो सत्य है, शिव रूप सुन्दर अरु सुघद ।
रचन करे वाक्यो, हटायें जो कछु गरहित दुघद ॥
जैसे गर्भ में जी रहे हम अति सुघद सुन्दर वनें ।
गद्य जगत में सब जनों पर नेह-वातायन तने ॥

●

भावी समै सबकूँ सदाँ वरदान ज्यों सुचि सुभ रहे ।
 भगवान भेरे देस में सुख साँति नव सरिता बहे ॥
 यदि कहै कछु हो अनैतिक प्रबल गति सों नास हो ।
 जगत भर के काऊ जन पै अपर कौ नही त्रास हो ॥



हे ईस सब बनि जाँय नैतिक, नीति धरि आगे बढे ।
 देस के सब अंग मिलिकें प्रगति सिखरों पर चढें ॥
 करम सों सब बरन बनिहै, स्वस्थ जन कौ वास हो ।
 मय चले ब्रह्मचर्य पथ पै, सदृष्टस्य संन्यास हो ॥



भारत

गाथा

धरम बंधन जाति बंधन भेद कित हूँ नहीं दियें ।
देम के इतिहास में नव जागरन हित मुर लिये ॥
सब समृद्ध सुखपूर्ण हितकर और निष्ठावान हों ।
निज जनम भू हेत सब हँसते भये बलिदान हो ॥

●

आजु जित दीयत पतन अति, कल वही उत्थान हों ।
भगवान भारत भूमि हित, सब भाँति सों कल्याण हों ॥
देश हित रत और निज भागा सबन कूँ प्रिय लगें ।
भगवान मेरे देम की सुभ भाग सब विधि गों जगें ॥

●

पतन हू उत्थान वनि कें देस कौ सम्बल बनै ।
 सुनारि मेरे देस की सत-पूत औ दुहिता जनै ॥
 हो वर-बधू में नेह औ, दाम्पत्य में शुचिता रहे ।
 रूले फले यस की सुरभि भूधाम पै नीकी बहे ॥



धेनु-धन बाढे, स्वैत क्रान्ति सों समृद्धि होय,
 कृशक हमारे स्वावलम्बी सब भाँति सों ।
 रुडि, डोंग अथ विसवास सों मुक्ति मिले,
 ग्यान औ विवेकरुत काम करें स्वाँति सो ॥
 सबहूँ पढाई अरु प्रगति विकास हेतु,
 सम अधिकार, कोऊ पिछरै ना पाँति सों ।
 गाँधों हो समाजवाद, हिन्द वासी भँन-भँया,
 होयै ना लराई धर्म, वर्ग, वर्न जाति सों ॥



ऐसी आवें जुग जर्म सबई सुगी औ तुस्ट,
 नव हौं निरोग सबही कूँ कर्म-ज्ञान हो ।
 ना नी कोऊ द्वेष करै कितहू काऊ के मग,
 सबकूँ नदाई ईग नाम कांडे ध्यान हो ॥
 नेवा होय गऊ देव अतिथि औ वृद्धजन,
 दीनहीन दुर्वन के रक्त को न पान हो ।
 सब जग माहि जे जै कार मेरे देस को हो,
 हिन्द के वसंयान की सब जग मान हो ॥



ईम कूँ मनाऊँ जगदीस ध्यान माहि लाऊँ,
 जगम-जमन पुन्य पुंज की दुहाई है ।
 तारी मोरे देस कूँ, उवारी, गत माहि इर्यो,
 त्वारे लीलाधाम की उपाधि याने पारि है ॥
 तेओ अवतार, मारि डारो जो दनुज होंय,
 फारि डारो कानिमा जो पापतम छारि है ।
 पतन धो पाप सों कराहि रक्षा मेरी देग,
 आय छिटकाओ छवि पुण्य की पुन्हारि है ॥

भारत विकास

फहर रह्यो ध्वज गगन में, लहरत मन आनंद ।
 प्राण जाँहि परि रास्ट्र की, गौरव रहे अमंद ॥

× × ×
 जन जन की मन भाँसतौ, फूलि रह्यो जनतंत्र ।
 जु रि मिलि सब पूरी करे, नव विकास की मंत्र ॥

× × ×
 जन जन की कल्याण श्रेय, भारत वनें अजेय ।
 मम निस्था सदभाव सों पूरन होवै ध्येय ॥

लहर लहर लहरे गुजा, फडर फडर फहराय ।
 जन गन मन गु जित गगन, जन जन मन हरसाय ॥

× × ×
 आयी भली नुराज ई, घर घर मगल मोद ।
 भरी मुनहरी फसल सों, जनम भूमि की गोद ॥

× × ×
 गाम गाम बिजुरी जुरी, कूप देत जल धार ।
 हीरा मोती निपजते, पूरि रहे भटार ॥

हूँ जो विकास वाची ग्यागत करन कवि,

और हूँ विकास होय सब जुटि जाओ रे !

भूलि भेद जाति-पाँनि धरम करम के हूँ,

एक मँया जाने भेन भँया यनि जाओ रे !!

देन हूँ महान ई तो और हूँ महान होय,

याये ताई म्येद-वारि मोती विग्रहाओ रे ।

याही एकता हूँ थोऊ छति नाँति होंन पाय,

तँ के मदभाय उर, नाम चमकाओ रे ॥

बाल पाल लाल दादा भाई मोती मालवीय,
 बापू भी जवाहर पटेल जंग जीत्यों है ।
 जाके ताई फांसी फद चूम्यों हौं भगतसिंह,
 सेखर सु जीवन सघर्ष माँहि बोल्यों है ॥
 नेता जू सुभास चंद रक्त सों जराई जोति,
 नर नारी बाल वृद्ध तन रक्त रीत्यों है ।
 तब कहूँ प्रानन के मोल सों कर्यौ है क्रथ,
 पायौ है सुराज जन जन मन चीत्यों है ॥



धनि धनि मेरी देस जानें ऐसी नाम पायौ,
 गुट निरपेच्छ साँचा सब ही की मोत है ।
 काहूँ सों न राखि, दीनी कुमति निवारि काज,
 सब ही के सारि ऐसी हिसा हीन नीत है ॥
 “जीओ और जीने” दो की साँचा विमवाम जामें,
 बसुधा कुटुम्ब की अटूट जाकी रीत है ।
 मोत की तो मोत साँचे जनन में प्रीत, नासी—
 अरि की अनीत काऊ सों न कोऊ भीत है ॥



भारत

गाथा

ऊँचे मुक्त नील नभ माँहि जाके निमि चाँस,
सुभग तिरगा ऊद्ध-गति फहरात है ।
देम के मिपाही भाई भाई मय भेद भूलि,
याकी मान राखिये कूँ द्वियाँ हूलसात है ॥
जाति पाँनि धरम करम मों हैं न्यारे न्यारे,
मनुआँ में तीऊ नेह नद लहरात है ।
एक उपवन केई विटप मुमन मय,
जम की मुबाम सों जगत महकात है ॥

ॐ

नेही मों नेह आँ चरी मों चर,
सो जैसे कूँ तँसोई रूप धर्यो ऐ ।
माय दुकै जु मुनीजन हेर कें,
औमुन कोष के रूप धर्यो ऐ ॥
देयो निसर्ग निहाल भयो,
जाके अंगन रूप अनूप धर्यो ऐ ।
भारत भूमि भलाई के नाथ मों,
विरय की और मरुप धर्यो ऐ ।

नैत खल्यान में सम्पति भूरि औ,
 धूरि में मोतिन माल जगी ऐ ।
 धेनु की दूध पीयूस की धार सु,
 पीवत प्रानन प्रीत पगी ऐ ॥
 पादप पाँतिन वेल सु वौरिन,
 ठौरनि ठौरनि आँखि लगी ऐ ।
 म्वेद के बुन्दनि कुन्दन से तन,
 दीनता देस कूँ छोरि भगी ऐ ॥



नैत में खल्यान में औ गाँव गाँव ठाँव ठाँव,
 देखी बदलाव जु सुतन्त्रता ने दीनों है ।
 रेतन के टीले अब हरे भरे वाग वने,
 ऊसर जमीन उपजाऊ रूप लीनों है ॥
 जहाँ जन बूँद बूँद पानी कूँ पियासे मरे,
 म्हाँई सर कूप की प्रबन्ध भूरि कीनों है ।
 दीय रक्षा जनता की जनता के हेत राज,
 लोक की कल्याणकारी राज ई नवीनों है ॥



जुरि मिलि काम करौ, भेदभाव दूरि धरौ,
 एक जननी की सब आंखिन के तारे हैं ।
 हिन्दू और मुसलमान, मिक्ख या ईसाई सब,
 भारत के भेन भैया प्रानन सों प्यारे हैं ॥
 ध्यान राखी देस की कुनाम कहै ह्वै न जाय,
 देस की सुनंश्रता के सभी रखवारे हैं ।
 अमर निरंगा प्यारी नभ फहरायी करै,
 तव ई कहामें हम हिन्द के दुतारे हैं ॥



सबन के न्यारे काम न्यारे नाम न्यारे ठाम,
 न्यारे न्यारे रूप रग तऊ सब एक हैं ।
 भासा भेद धरम के भेद परिधान भेद,
 भारत की सम्कृति के रूप हू अनेक हैं ॥
 ऐसी या अनेकता में एकता विराजै सदा,
 एकें दूमरे के हेत भाव सदा नेक हैं ।
 एक तऊ के मे फूल बनिके रहिगे सदा,
 भेद बरतैगी याय वंगति सों ऐक हैं ॥



चारों ओर होय हरियाली मेरे देस माँहि,
 नेत पथ गाँव गली वृक्ष लगवाओ रे ।
 हरे भरे वृक्ष कहै कोऊ काटि पावै नहीं,
 पसु पंछी हेत उर नेह सरसाओ रे ॥
 देस की कानून कहै भंग नहीं होवें पाय,
 रोज रोज जनता कूँ विधि समझाओ रे ।
 साँची अनुसासन कठोर श्रम दूर दृष्टि,
 देस की प्रगति हेत इन्हें अपनाओ रे ॥



विद्या सों विहीन नर पसु सम मान्या जात,
 विद्यावान जहाँ जात म्हाँई पूज्या जात है ।
 ज्ञान के प्रकास से उजाराँ चहुँ ओर होत,
 ज्ञानहीन जीवन दुख्याराँ ह्वै नसात है ॥
 गाँव गाँव भारत में शिक्षा का प्रबन्ध भयी,
 बू ती है अभागो सिसु वृन्द न पढ़ात है ।
 ऐसे या विज्ञान की प्रगति वारे जुग माँहि,
 पिछड़ि न जाओ कहै, जग भग्यो जात है ॥



सोयी कछु काम, जासों देस की विकास होय,
 निज की भलाई और देस कीऊ नाम है ।
 घर के ती घीर पाँय, भली मानें देवताऊ,
 आम के ती आम अरु गुठलीन के दाम है ॥
 उत्तम है गेती व्यवसाय यासों ऊँची नाँय,
 चाकरी ती अधम अशुद्धता को धाम है ।
 भारत के भैया श्रम गौरव को पाठ पढी,
 देस के विकास सों बनिगे सब काम है ॥



बढ़ती जाय मेरी देस सब छेत्रन में,
 एक घेरि फेर बनें जग सिर मोर है ।
 स्वावलम्बी बनें औ अभाव सब दूरि होंय,
 देवे पुसहाली ही दिपाई ठौर ठौर है ॥
 और देग मांगें जो सहायता ती देती रहें,
 हर देस वासी दानी बनें पौर पौर है ।
 हिन्द देग विश्व के गुरु को पद पावे फेर,
 हिन्द के समान हिन्द, नहीं कोऊ और है ॥



छुआछूत भूत भाग्यी, देस की सुभाग जाग्यी,
 करम सों हेत लाग्यी देस ई महान है ।
 काऊ तरियाँ की कोऊ भेदभाव रह्याँ नाँय,
 न्याय आँ कानून सब हेत ह्याँ समान है ॥
 कोऊ होवे धरम आँ भासा चाहे कोऊ होय,
 औसर समान और एक संविधान है ।
 मासन की मान रहे, ऊँची स्वाभिमान रहे,
 प्रानन सों प्यारी निज देस कीई मान है ॥



भयी ऐ विकास मेरे देस माँहि ओर ओर,
 राज पथ बने पगडंडिन के ठौर हैं ।
 दूरि दूरि बसे गाँव जुरे यातायात हू ते,
 रेलन के रेलपेल मोटर हू दौरि हैं ॥
 बने है मकान आलीसान गली गंतन में,
 चौकदार बाखरि में बने पौरी पौर हैं ।
 जहाँ कभू रेतन के टीले वेसुमार हते,
 म्हाँई अब वागन में आमन के दौरि हैं ॥



ऐसी ई मुराज जामें जनता की राज भयी,
 पंच सरपंच थी प्रधान चुने जात है ।
 जिले में प्रमुख अरु राज में विधायक हू,
 जनताई सासन के हेत पहुँचात है ॥
 जन का ई राज जन ही के हेत जन द्वारा,
 माँची जनतंत्र याई देस में लखात है ।
 पराधीनता में जिन टूकन के लाले परे,
 बिनकीही थारीन में आजु दारि भात है ॥



जहाँ अँधियार माँहि घूँघट में घुटी नारि,
 म्हाँई अब जगमग जोतिन के जान है ।
 नर नारि माने जात एक मे, ना भेदभाव,
 याई विधि प्यारी लाली जँमे प्यारे लाल है ॥
 काँधे सों जुराय काँधो काम करें नर-नारि,
 स्वेद जन रूँदन सों बीतगे अकाल है ।
 गाँव मेरे देस के मुराज में मुरग बने,
 हिन्द के रहैचँया मय भाँति सों निहान है ॥



नहीरे है कुटुम्ब भली भाँति ह्वे वें पोसन हू,
 गाँव गाँव पढिबै की भर्याँ भारी चाव है ।
 छोरी छोरा सब विना भेद विद्या पाय रहे,
 काऊ तरिया की कहै रह्यो ना अभाव है ॥
 वेतन मे ट्यूबवैल पानी देत ऊरपूर,
 रुढिवाद-छूटिगो विज्ञान की प्रभाव है ।
 काऊ की ना धौस अब सोसन सों मुक्ति भई,
 गाँव के वसैयान की बदल्यो सुभाव है ॥

गामन में गंदगी के ढेर जो लगत हुते,
 जन ह्वै कें पमु तुल्य जिन्दगी वितामते ।
 कोल्हू के से वैल निसि धीस पिरतेई रहैते,
 रखो सूखी वासी कूसी पामते सो घामते ॥
 आजु विन गामन की छवि हेर रीझै मन,
 दीखें नर नारी खाते पीते गीत गामते ।
 हरे भरे गेत अह वागन के बीच बसे,
 भारत के गाँम नुरधाम से सुहामते ॥

गान गीत गाय खेल भूमरे ई दीस परे,
 चहुँ ओर हरे भरे खेत नहरात है ।
 दधि-की विलोमनी में रई की घमर नाद,
 लौनी की जो स्वाद वाकी अनकैनी बात है ॥
 कोऊ नाप दीन हीन काऊ पै ना रिन भार,
 सांचहू मुनंत्रता की भारी करामात है ।
 हँ रझों विकाम दिन दूनी राति चौगुनों सी,
 गीमन के जीवन में मुगं हू सजात है ॥



देम की विकाम भारी गीमन में दीख परे,
 फूँन की ही टांनि, म्हापं आजु पक्के धाम है ।
 पत्थी चटसाल, टाफघाने अह अस्पताल,
 पचायत हू के घर दीघत ललाम है ॥
 यनी है दुकान गजें हाट पक्के बाट बने,
 गीमन के भैयान कुँ सबई आराम है ।
 सोने की निरैया केर वन्दो जान मेरी देम,
 होत है मुनाम जब सब करें काम है ॥



गाँम वारे भँयान कूँ करूँ राम राम मैं हूँ,
 सब सों मोय इतनों ही आजु कहनों है ।
 देस की प्रगति अरु सबको विकास होय,
 याके ताँई खेतन कूँ स्वेद वारि देंनों है ॥
 मिलि जुलि काम करे भेदभाव दूरि धरें,
 सीत घाम सबन कूँ एक संग संनों है ।
 नबई कहिगे जग वासीन सों ताल ठोकि,
 हिन्द ई हमारौ सब विस्व की गहनों है ॥

आओ भँन भँया या विकास माँहि जोगु देओ,
 मँया ऐ हमारी हम सब याके बाल हैं ।
 हिन्दू आँ मुसलमान सिक्ख आँ ईसाई सब,
 आँखिन के तारे और याके प्यारे लाल हैं ॥
 गूँव उपजाओ अन्न, फल फूल दही दूध,
 स्वेत हरी क्रान्ति के तौ दीपत कमाल हैं ।
 ल्होरे परिवार राघों, पोसन उचित होय,
 देम हूँ निहाल देसवासी हूँ निहाल है ॥

भयो जो विकाम वामें छति नाँय होंत पावें,
 और हूँ बढ़त जाय ऐसी सबल्य लेओ ।
 कोऊ काऊ के न कहूँ मुग्रन के कीर छीनें,
 स्वयं हूँ जीओ और औरन हूँ जीन देओ ॥
 गेट अपने सों कछू बचै ताँ बचार्थाँ रोज,
 जो हँ कछू दूवरे बिनहूँ सहाराँ देओ ।
 सवरे भैयाऊ जब एक से बनिगे तब,
 देम हूँ वनेंगी ऐसी प्रन सब लै लेओ ॥



चहुँ ओर हुयो ऐँ विकाम हिन्द देस माहि,
 जहाँ अंधियार हतो अब ज्योति जागी है ।
 संतति अनेक जिन घीतो रुटिवादिना में,
 बेऊ अब जागे ओ प्रगति रचि लागी है ॥
 सिच्छा की अभाव हुतो पगुवन् जीते जन,
 अब जन जन ह्योपि सिच्छा अनुरागी है ।
 जाके जाये बेटा बेटो अबहूँ न माला जाय,
 ऐसी हिन्द माहि कोऊ मान ना अभागी है ॥



चुनि गये सिच्छा केन्द्र गाँव गाँव ठाँव ठाँव,
 सबकुँ समान अधिकार राज दीनों है ।
 चाहे हो धनिक या गरीब भैया होय कोऊ,
 सिमु पामें सिच्छा सो प्रबन्ध ऐसा कीनों है ॥
 लरिकान संग कन्या पावत प्रवेस अब,
 सह सिच्छा देस माँहि भारी हित चीन्हीं है ।
 बाल-बालिका के बीच रही जो दीवार पैलें,
 अब अवरोध सब राज तोरि दीनों है ॥



अध्यापक पद हेत वेतन बढ़्यो ऐ अब,
 नूतन भवन सुविधाऊ खूब बाढ़ी है ।
 पाठ्यक्रम बने अब देस काल अनुरूप,
 देस निच्छा छेत्र में अनेकों से अगाड़ी है ॥
 कोऊ अब हृदिग्रन्त अंध की विस्वासो नाँय,
 नाती जड़ रह्यो कोय नतर अनाड़ी है ।
 देन गुसहाल बनें याके ताँई जन जन,
 निश्ठासग करि रहे महनत सुगाड़ी है ॥



नक्ति का विकेंद्रीकृत रूप जनतंत्र माहि,
 सारे विस्व से हूँ यादि भारत में आयी है ।
 गाँम गाँम मोहि धनी पंचायत जन प्रिय,
 पंच मरण पंच न्यायपंच पद पायी है ॥
 पंचायत समिति प्रधान जिला प्रमुख हूँ—
 जन प्रतिनिधित्व का रूप मनभायी है ।
 राज्य में विधायक आँ सांसद मपुरे देम,
 उनमें ही लोकतंत्र साँचा रूप पायी है ॥



देम की संप्रभुता है संसद के माहि मूर्ता,
 नविधान कोई मान सबकी दायित्व है ।
 राष्ट्रपति देम की सर्वोच्च पद शोभमान,
 हर राज्य संघ में सम्बद्ध हूँ स्थायत है ॥
 देम की प्रधान मन्त्री कार्यपालिका की धनी,
 मंत्रिमंडल माहि गाँची नक्ति समहित्य है ।
 धर्मन्यायिका ती करे देस की कानून पाम,
 कार्यपालिका में याकी पासन निहित है ॥



गुन्नि गये सिच्छा केन्द्र गांव गांव ठांव ठांव,

सबकुँ समान अधिकार राज दीनों है
चाहे हो धनिक या गरीब भैया होय कोऊ,

सिमु पामें सिच्छा सो प्रबन्ध ऐसों कीनों है ।
लरिकान संग कन्या पावत प्रवेस अब,

सह सिच्छा देस मांहि भारी हित चीन्हां है
वान-वालिका के बीच रही जो दीवार पैलें,
अब अवरोध सब राज तोरि दीनों है ।

अध्यापक पद हेत वेतन बढ़्यो ऐ अब,

नूतन भवन सुविधाऊ मूब बाड़ी है ।
पाठ्यक्रम बने अब देस काल अनुरूप,

देस सिच्छा छेत्र में अनेकों से अगाड़ी है ॥
कोऊ अब रुद्रिप्रन्त अंध की विम्बासी नांय,

नातां जड़ रही कोय नतर अनाड़ी है ।
देस गुमहाल बनें याके ताई जन जन,

निम्टामग करि रहे महनत गुमाड़ी है ॥

नक्ति का विकेन्द्रीकृत रूप जनतंत्र माहि,
 गारे विन्ध्य ने हू वादि भारत में आयी है ।
 गाम गाम माहि वनी पंचायत जन प्रिय,
 पन नरणं न्यायपंच पद पायी है ॥
 पंचायत समिति प्रधान जिला प्रमुख हू—
 जन प्रतिनिधित्व का रूप मनभायी है ।
 राज्य में विधायक आं गामद सपूरे देम,
 टनगों ही लोकतंत्र सांची रूप पायी है ॥



देन की मंत्रभृता है मंगद के माहि मूर्त्ता,
 गविधान कीई मान सयकी दायित्व है ।
 राष्ट्रपति देम की सर्वोच्च पद शोभमान,
 हर राज्य संघ में सम्बद्ध हू स्वायत्त है ॥
 देन की प्रधान मन्त्री कार्यपालिका की धनी,
 मंत्रिमंडल माहि सांची सक्ति समाहित है ।
 ध्ययस्थापिका ती करे देस की कानून पास,
 कार्यपालिका में याकी पालन निहित है ॥



न्यायपालिका है पूरे तौर पे सुतंत्र अरु,

न्यायाधीस निर्विवाद माननीय मुक्त है ।
कार्यपालिका के अधिकारी सेवा भाव युत,

संविधान के ई अधिकारन सों युक्त है ॥

जन नेता देस के आदेश जनता को मानि,

विविध विभागन सों होमें वे संयुक्त है ।

याई तरियाँ सों सब देस की प्रबंध चलै,

कोऊ ना अधिकार कर्त्तव्य सों वियुक्त है ॥



पाये अधिकार मूलभूत देस वामीन नें,

तिन्हे छीनवे को काऊ कू न अधिकार है ।

सब अधिकारी न्याय पाइवे के ताई इहाँ,

सब कू समानता मुबंत्रता सों प्यार है ॥

सब ही समान संविधान न्यायपालिका कू,

नांही भेदभाव नांही कोऊ अत्याचार है ।

औसर समान हैं विकास ओ प्रगति केरे,

पिछड़े वर्ग कू आरक्षण अधिकार है ॥



जुग जुग सों जो वर्ग पीड़ित औ शोपित हे,
 पनुवत भारे अत्याचार रोज होमते ।
 कन्न वेगान बंधुआ के रूप उम्र भर,
 मार घायकों ऊ नाहि कोऊ कहै रोमते ॥
 बे ना जागतेई रैन काटते दुग्यारे भारे,
 गुलगुने गद्दान पै ती शोपक ही सोमते ।
 धनि धनि पाई जो मृतप्रता पै बलि जाऊँ,
 मुक्त भये सब जन शोपण के जोंम ते ॥



आजु कोऊ काऊ की न स्वामी नाती मेवक ही,
 सब हैं समान मोंठ बड़ी नाय मोंठ ते ।
 कोऊ कहै आजु थरथरात ना विलोकिकों,
 उठत जो रोप आगि भाथे की सरोट ते ॥
 नानी डरे कोऊ तोपघाने छुड़दौड़ हूँ ते,
 नाही डर रह्यौ अब गढीगढ कोट ते ।
 कोऊ करि घोपणा चुनाव की प्रचार करि,
 उच्चतम् पद पाय सकत है बोट ते ॥



चाहे वनो सांसद विधायक प्रशासक या,
 राष्ट्रपति वनों या श्रमिक या किसान ही ।
 मुली प्रतियोगिता समान अधिकार सबे,
 काऊ की बपीती नाँय पद मान शान ही ॥
 जेती चाहो सिच्छा लै प्रसिच्छन हू पाय ले औ,
 कोऊ वनें पंच कोऊ वनत प्रधान ही ।
 कोऊ व्यवसाय पद कौसल कला हो कोऊ,
 सम अधिकार न्याय दिये संविधान ही ॥



सवन कूँ सिच्छा मिले बिना काऊ भेदभाव,
 प्रौढ सिच्छा हू काँ परवन्ध राज कीनों है ।
 नर नारी सग संग बिना भेद पडि लेऔ,
 सबकूँ मुनैरी लाभ प्रजातंत्र दीनों है ॥
 बीते दिन जब सिच्छा पाते हे विसेस वर्ग,
 अब तौ ई मुधा पान सवन कूँ पीनों है ।
 बीते दिन जब जीते ठाट राँ विसेस जन,
 अब सुखी जीवन सवन कूँ ई जीनों है ॥



पैलें कर्ज देते साहूकार अरु बोहरे ई,
 अंधाशुद्ध चरवृद्धि व्याज वे वसून्ते ।
 जमा घन मनमाने ढग सों दिखामते वे,
 कर्जदार की ती गून चूमि चूमि फूलने ॥
 ये ती दीन होती जाते, पैदा सब व्याज में ई,
 ये ती वाग यमीनान झूलान पै झूलते ।
 अब भयी रामराज मासन की चक्र नाम,
 मय देगवागी भैया फूलते औ फूलने ॥



कर्ज मिले वीमा अरु चंक मस्थान तेऊ,
 व्याज दर समीचीन किस्त वांधी जात है ।
 अग्रिम मिले सो वासों काम-धाम करी कोऊ,
 भिन्न व्यवसाय हेतु राशि मिल जात है ॥
 रोजगार हेत अब नाम पंजीकृत होंय,
 कैऊ ऐसी संस्थायें जो मार्ग दरसात है ।
 नागरिक काम पामें देस की उत्थान होय,
 लोक कल्याण करी राज सो कहलात है ॥



काऊ चीज वस्तु की कमी हो देस माँहि कभू,
 सही वितरण होय राजन के काम हैं ।
 जग जग खुलत दुकान वस्तु केन्द्र खूब,
 काडं बने लिखी जात संख्या अरु नाम हैं ॥
 याई तरियाँ सों करि दूरि सब तंगी पीर,
 सुखी हो समाज करे ऐसे इन्तजाम हैं ।
 घर वारे खीर घाय, भली मानें देवताऊ,
 आमन के आम औ गुठलीन के दाम है ॥



देस की किसान जो आधार सब देस की ऐ,
 बाकूँ सब भाँति सों विकास फल देत हैं ।
 उन्नत सुबीज अरु खाद की प्रबन्ध होय,
 जोत औ चुवाई की प्रबन्ध करि देत है ॥
 फसल कहै जो काऊ कारन सों गिर जाय,
 म्हाँ पै भूमि कर की बसूली छोरि देत हैं ।
 सोने सी फसल होय कृषक समृद्ध होंय,
 ऐसीई प्रबन्ध अधिकारी करि देत हैं ॥



१५२

आरु मेरी देस जगती की गिर भीर बन्धी,
 लहरत जाके मुक्त नभ में तिरंगा है ।
 पहरत जाकी जग अनिल तरंगन में,
 बन्दना के गीत गामें जमुन सुगगा है ॥
 हिमगिर सीस की किरीट मन भायनों सी,
 जन जन तन पृथ्वी ऐ मन-नंगा है ।
 जन गन मन धुनि गूँजि रही ओर छोर,
 लहरायो उतछल जलधि तरंगा है ॥



एक भर्यो पूर्वा वाग मोहत हमारी देस,
 विविध विटप बेल सुमन मुहात हैं ।
 घरम अनेक बेमभूसा छान पान भेद,
 ऐसी हे अनेकता सुरंग सरसात हैं ॥
 पाई है विविधता में एकता जो मेरे देस,
 बाकी सरि कोऊ देस कहै न करात हैं ।
 शिल मिल सांझन ज्यों हार में विविध फूल,
 विविध हैं बाद्य एक धुनि में समात हैं ॥



चाहे कोऊ बोली बानी आंचर औ प्रान्त कोऊ,
जाति पाति कुल कोऊ धरम धरैया है ।
एक मातृ-भूमि वाके सुवन सकल हम,
भेदभाव भूलि सब सगे भैन भैया है ॥
ऐसे कछू सस्कृति के प्रान हैं सुधा सों सने,
झेलि झेलि झोंका ये ती आज हू जिवैया है ।
पाय के संजीवनी सुधा सों ऊर पूर ह्वैं कैं,
भारत के वासी प्रेम भाव सों रहैवैया है ॥



बडतोई जाय मेरो देस सब छेत्रन में,
एक बेर फेर वनें जग सिरमीर हूँ ।
स्वावलम्बी वनें औ अभाव सब दूर होंय,
देवै खुसहाली ही दिखाई ठौर ठौर हूँ ॥
और देस मांगे जो सहायता तो देती रहे,
हर देस वासी दानी वनें पीर पीर हूँ ।
हिन्द मेरी सोने की चिरैया बनि जावैं फेर,
हिन्द के समान हिन्द, नहीं कोऊ और हूँ ॥



मेरे देन माहि गन जनुन की धार बहै.

हिनगिरि माय की सुराण भरुषी कहनों है ।

चरन पद्यारती नो जलधि हितोर तेउ,

नद मंद मोतल समीर की कहनों है ॥

ऐने देन माहि रात दिना की विराम अब,

सब देन मानिगे भारत की कहनों है ।

जाके जो निदान्त विश्व सांति के ताई बने,

बिनसोई विश्व कूँ बुटुग्य रूप देनों है ॥



बेर बेर टेर बहै देसवासी मुनि सेओ,

करो जोहू काम ताहि गाई विधि कीजियों ।

फलं फूलं हिन्द याके बासी गुसहाल रहें,

भेद की दीवार सात मारि तोरि दीजियों ॥

कोज जाति होय चाहे कोज होय धर्म ह्यापे,

सबकूँ सहोदर ही मानि उर सीजियों ।

करि सहयोग सद्भावना सों आगे बढ़ि,

नेह के सुधा की रस हिन्दवासी पीजियों ॥



आजु सब देस याई देस को वतायो पथ,
 मानि के सही औ सांचौ वाई पै चलत है ।
 तीसरी जो विस्व गुटहीन विस्व सांति नेही,
 याई के नेतृत्व मांहि फूलत फलत है ॥
 हिन्द नें सुतन्त्रता के चार दसकन मांहि,
 ऐसो दीनों पाठ कोऊ काऊ ना छलत हैं ।
 सब कूँ सुतन्त्रता समानता औ बहु भाव,
 सांचे नेह मांहि सद्गुण ही पलत है ॥



पंच वरसीय योजना की जो प्रारम्भ भयो,
 वासों देस वासीन की दीनता नसात है ।
 कृसी सिच्छा रोजगार हेत धन व्यय होत,
 हर देस वासी बाकी भारी लाभ पात है ॥
 अन्य देस मांहि जो विज्ञान की प्रगति भई,
 चलत उद्योग धन्धे धन हू बढ़ात है ।
 भारत की योजनायें विनहूँ की लाभ लेत,
 प्रगति विकास के सुपंथ देस जात है ॥



पले गाम दीपत हे गदगी के भरे धाम,
 पमुवत जीवन जो जन ह्यो विनामते ।
 कीट कुलबुलात दुर्गन्ध भरी नाली माहि,
 बाही भांति मानव हू भारी दुष्ट पामने ॥
 अंध विसाशास औ अग्यान की अंधैरो पनों,
 वामें परे जन दिन राति अकुलामते ।
 अत्र वेई जन गिच्छा पाय या उजारे माहि,
 दीपत है गुमहाल पीमते औ पांमते ॥



सासक विदेगी वे तां धन लूटिबे कां ध्येय,
 तै कें देस वासीन कू सोसन में मानते ।
 अपनेई देस कू वे भेजते हे भारी धन,
 दू ई करते जो बिनकेई मन मानते ॥
 आजु देम अपनों ऐ सासक हू, वे ई जन,
 जिनकू निकट तेई मतदाता जानते ।
 अपनों जो धन दू ती अपनेई काम आवें,
 देम अपनों है बडि कें ऊ निज प्रानते ॥



पैले भासा बिनकी ही मान पाती चहुँ ओर,
 थाने आँ कचेरी शाला और काम काज में ।
 अँग्लभासा पढ़े जन माने जाते ऊँचे भौत,
 बिनकूँ ई ऊँचे पद मिलते हे राज में ॥
 अब चहुँ ओर निज भासा की सनेह जाम्पी,
 मातृ भासा पूज्य भई राज ओ समाज में ।
 भारत के भेन भैया त्यारी ई कर्त्तव्य अब,
 हिन्दी की प्रयोग करौ सब काम काज में ॥



जनप्रिय देस सरकार की कर्त्तव्य भयी,
 हिन्दी भासा टंकन के यंत्र की प्रयोग हो ।
 अँग्ल भासा टंकन के यंत्र हटि जाय सब,
 हिन्दी भासा टंकन के ज्ञातान की योग हो ॥
 आँनलिक मामा हू विवास करि आगे होंय,
 काऊ कूँ विदेसी भासा की न कहूँ रोग हो ।
 देम भक्ति बढ़े भासा भक्ति की सहारी पाय,
 देम सेवा माँहि सबकीई मनोयोग हो ॥



१५ =

सागर तरंग पद पकज के पायजेंध,
 ब्रह्म हूँ की हार गग कवित कनिन्दी हूँ ।
 तिमगिरि सीम की किरोट कमनीय चन्वी,
 चातक चकोर पिक मोर मनो वदी है ॥
 म्यामल गुगरय धरा अचल मुद्राय रह्यो,
 इन्दु अरविन्द गोहें आनन अनन्दी हूँ ।
 ऐसी रूप रामि पै विराजत पीनूम पगी,
 हिन्दी मेरी जननी के माल की मुविन्दी है ॥



चाहे तुम बंभे हूँ अनूठे काम करि लेहु,
 करि मख मत पुन्य इन्द्र पद पाओगे ।
 तिहूँ लोक सागन की वाग डोरि थाम लेहु,
 सागर हूँ मथि चाहे चौध रत्न लाओगे ॥
 ओर कछू पाय जाओ, छाय जाओ विम्ब मांहि,
 सूरज औ चांद को निचोरि मुधा पाओगे ।
 और हूँ असभव सों सभव बनेगी परि,
 भारती हूँ भूलि भारतीय ना कहाओगे ॥



कन्नट तमिल तेलगु अरु मलयालम,
 ऐसी ऐसी समृद्ध सुरम्य वर भासा हैं ।
 टिगल ओ पिंगल डूढारी अरु हाड़ीती हू,
 निज निज छेत्र की मुखर अभिलासा हैं ॥
 प्रजभामा तीन लोक मोहिनी सरस मंजु,
 अवधी पंजाबी सिन्धी भोजपुरी भासा हैं ।
 मम्कृति की अम्बुधि लहर रह्यौ ऊर पूर,
 भासा नाहि ये तो इन जनन की स्वांसा है ॥



और हू अनेक उपभामा बोली वानी मंजु,
 हिन्दी के पयोधि कूँ भरनहार धार हैं ।
 इनके विकास सों ही हिन्दी की प्रगति होय,
 देसयामी-उर मांहि सब हेत प्यार हैं ॥
 मय मांहि गीति नौति विविध विचार भाव,
 सब वेई न्यारे-न्यारे मुगुट त्यौहार हैं ।
 ये ती मव रगराजे मुमन मुहात प्यारे,
 हिन्दी के सुरम्य वक्ष ही के चार डार हैं ॥



१९०

होपनी विमान मेरे देस की अनेक गुनों,
 जब सब देसवासो चरित बनाइगे ।
 र्वापारी चनिज माहि मुदता की ध्यान करे,
 दर हो उचित मिलाबट सों यत्नाइगे ॥
 जमें विगयान कोऊ कहै गों गरीदी बन्तु,
 नव जगै प्राहक उचित दर पाइगे ।
 ना नो कोऊ कम सोने नाही कर यचना हो,
 हम हू बनिगे अरु देस हू बनाइगे ॥



हूअ दही पृत साग फल फूल मुदता हो,
 देसवामी तन और मन सों हू स्वरथ हों ।
 रहै ना तनाव अरु मानसिक सान्ति पाय,
 गाते गाते काम करिबे के ई अभ्यस्त हों ॥
 हूर होंय पापाचार अनाचार अत्याचार,
 ढोंग औ पागड़ मय गून गों ही धरत हों ।
 नर नारि बाल-चन्द्र कुमुम बली औ फूल,
 देस के उत्थानकारी कामन में धरत हों ॥



देस के विकास के ताँ होवें मूल सिमु वृन्द,
 याही काल माँहि ससकार हू जमत है ।
 ऐसी करनी है इन्तजाम परिवार माँहि,
 ल्हारे जन बड़ें के सामने नमत है ॥
 मैया सों ही सीखें सिमु मांगलिक मुभ बात,
 ऐसे सिमु वृन्द माँहि ईस ही रमत है ।
 प्राथमिक सिच्छा होय चरित सिखान हारी,
 वासों भावी काल के विचार हू शपत है ॥



सिच्छा की विभाग पुन्य धाम अति पावन हो,
 सिच्छक वनें दू जो चरितवान नर हो ।
 निज आचरन सों सिखावें सदगुन सिख्य,
 ब्रह्मचर्य आश्रम में साला गुह-घर हो ॥
 तोता की रटन्त छाँड़ि जीवन के पाठ पढ़ें,
 मान मरजादा करतव्य में मुघर हो ।
 तम सों प्रकास माँहि लावें विद्या सिख्यन कूँ,
 मत्स्य-शिव-मुन्दर माँ जीवन अमर हो ॥



आजु की जो पद्धति चलाई है परीच्छा लागि,
 बू तां अर्थहीन कोरी नकल विदेस की ।
 तीन तीन धंटा में विसय की ज्ञान जांचत,
 औ चाहे परीच्छा लेनों सद्गुण असेस की ॥
 सपूरे व्यक्तिव्य की परीच्छा होय रोज रोज,
 जांच करी जाय गान, पान, सोच, वेस की ।
 सरबतोमुखी हो जो विकास सिच्चा पायकें,
 तौई नाव पार लगे सूढती या देस की ॥

सिच्चा की समबन्ध अब जुरं व्यवसाय से.
 विज्ञान कौज भाग हो समं की ई चाह है ।
 अपनां जो सोनों बू हू पास अपने ई रहै,
 चले चलें दीरि जो नवीनता की राह है ॥
 कूदें और चूवक लै देखें हम बेर बेर,
 ग्यान के या सागर की केती औड़ी थाह है ।
 नानें हूँदें वानें पाये पंठ धार मुक्ता माल,
 ध्येय पाइबे कूँ वहै सिच्चा की प्रवाह है ॥

मानत है कवी सिच्छा देस में बढ़त जाय,
 खूब है विकास याकौ चहुँ ओर देस में ।
 परि याकौ स्तर गिर्यो ऐ, उर सोच भारी,
 काहे कूँ नकल करें है रक्षो विदेस में ॥
 जुरि मिल जन नेता सिच्छक औ गुनी जन,
 नई सिच्छा पढती चलामें नव बेस में ।
 गिनती के संग जब गुन की बढ़त होय,
 तबई चरित बल बढ़गी सुदेस में ॥



भारे हू उद्योग जो चले हैं सो चलन देओ,
 बिनसों विकास की अमंद गति ह्वै रही ।
 संग में कुटीर धंधे गामत में पुरि जाय,
 वहेँ देस वासी जैसी विस्व में हवा बही ॥
 स्वेद की सुबूदन से सिच सिच सस्य पूरि,
 सोने की उपज सों उमंगित, हो देस मही ।
 भेरे देस वासी ऐसे साहस सों पूरित हों,
 गलत कूँ गलत औ सही कूँ कहें सही ॥



भारत

गाथा

सब छेत्र-माहि होवें सुद्धता सुनीती सांचे,
तवई विकास की मुलाभ मद्य पाइंगे ।
सांची निरमान, वामें कछू छल छप हो न,
नहर ओ बाघ कूप सर काम आइंगे ॥
देस के विकास के सुस्तंभ अभियंता जूथ,
सही लै मीमेन्ट साज मृजन कराइंगे ।
ठकेदार श्रमिक ओ कारीगर कर्मचारी,
सब सांचे हाँथ तां विकास करि पाइंगे ॥



देस देस देस की विकास मोय आस बंधै,
मेरी देस आजु काऊ देस सों ना कम है ।
बढतीई जाय तकनीक ओ विज्ञान माहि,
अणु साक्तिवान अब काऊ कूँ न भ्रम है ॥
आधुनिक हिन्द के सृजक ती नेहरू बने,
इन्दिरा के नेतृत्व में भयी अनुपम है ।
बढती जो नाव वाकी थामी पतवार अब,
युवा रक्त माहि बढिबे की दमखम है ॥



देस में वीभत्स कूर कृत्य कर्यौ हिंसा युत,
 विस्व की प्रकास-पुंज छायाँ तम-तोम नें ।
 रोय परी घरा, गिरि सागर सरित सर,
 खेत खलिहान रोये, आहू भरी व्योम नें ॥
 जानें देस हित बलिदान कीयो प्रानन की,
 दीनी है गवाही ध्रुव रवि अरु सोम नें ।
 वाके सिद्ध कीये काम प्रान दैं कें पूरे करें,
 लीनी है शपथ कवि के ती रोम रोम नें ॥



जो हो उनमादी बुद्धिहीन रूप दानव की,
 वाकी है न जाति कौऊ वाकी नाँय धर्म हू ।
 काहे कूँ विगारो मेरे देस की आदर्श रूप,
 काहे कूँ भुलान जात वाकी उर-मर्म हू ?
 निज देस वासीन कूँ मारि कें फलीगे नाँय,
 युतसित भावना औ युतसित कर्म हू ।
 देसवासी भैया भेन एक भैया जाये सब,
 छाड़ी उनमाद और छाड़ी दैं अधर्म हू ॥



हिन्दू औ मुसलमान सिक्ख औ ईसाई जन,
 बीद पारसीऊ इन थापिन के तारे हैं ।
 गुह्यद्वारे गिरिजाघर-मन्दिर औ मस्जिद,
 हिन्दू के बसंयान कूँ प्रानन सों प्यारे हैं ॥
 सयन के धर्म जैसें याग में मुमन पुंज,
 मंजु मुचि सरन सुरभि उर धारे है ।
 एक प्रान राजत है नेह के मुघा सों मने,
 ऊपर सों उन चाहे शीघ्रत ये न्यारे हैं ॥



देस की विकास एयता के सदभाव सों ई,
 एक माला जामें भाति भाति के सुमन हैं ।
 मन ती हमारे एयता के सुघा ऊर पूर,
 भिद्य चाहे रंग रूप धरम औ तन है ॥
 भासा भेद, प्रान्त भेद भूयि कें गले सों मिलि,
 करी बलिदान देस हित तन-मन हैं ।
 देस है महान याके वासी हू महान जन,
 सान्ति औ अहिंसा सों सुसिक्त कन कन है ॥



हिंसा की चलन प्रतिकूल मेरे देस के तो,
 हिंसा मांहि लिप्त कैसें हिन्द के वसीया है ?
 तोड़-फोड़ मारकाट सूटपाट आग जनी,
 कारज ये निन्दनीय कौन करवैया है ?
 ऐसे दानवीय कृत्य करत वे राकस हैं,
 देस के विकास की गती कूँ रुकवैया है ।
 सबकूँ सपथ राम, नानक मुहम्मद की,
 लरी भिरी मति, सब सगे भैन-भैया है ॥



आओ भैया भैन मिलि जुलि कें सपथ लेओ,
 देन ई हमारी प्राण हूँ साँ हमें प्यारी है ।
 घुज है तिरंगा मुक्त नभ में लहर नेय,
 जन गन मन राष्ट्र गीत सुखकारी है ॥
 जाके ताई बलि चन्द्रसेखर भगतसींग,
 बापू ओ सुभास नेहरू सास्त्री प्राण बार्थी है ।
 इन्दिरा हूँ वेदी पं साहीद हूँ अमर भई,
 हर हिन्दवासी याकी आजु रघ्वारी है ॥



प्रजानत्र पद्धति में जाकी है जबाब देही,
 याकी सब मंग देओ देस के विकास कूँ ।
 थोधी निन्दा करें ये ती देस की ई हानि करें,
 मजन की दीठ सों बढाओ विसावास कूँ ॥
 कोऊ होय दल चाहे कौसी हू विचार धारा,
 सब याके सिमु, मति, तोरो याकी आस कूँ ।
 रक्त स्वेद म्रम देसभक्ति विस्वसांति, नेह,
 मानवता हेत बलि देधी सांस सांस कूँ ॥



कोऊ जन होय वासों देस बड़ी माननों है,
 स्वार्थ कूँ छोरि देस कोई नाम करनों है ।
 याके छेत्र छेत्र मांहि सबकी विकास होय,
 जहाँ है अंधेरी मिलिकेई सो हरनों है ॥
 रिक्त याकाँ कोस काऊ कारन सों भयी होय,
 करिकें सम देसवासीन कूँ भरनों है ।
 याही में जनम लीओ अन्न जल तन मांहि,
 याही के मुनाम कूँ हँसि हँसि मरनों है ॥



कंसी हो सोभाग सब भैन भैया हिल मिल,
 खूब करें काम औ सुनाम बढ़े देस को ।
 मजसों सनेह कोऊ काऊ को ना घात करै,
 देसी वेस धारें त्यागि विदेसी दुवेस को ॥
 एक होबै जाति हिन्दवासी कहलायें सब,
 एक ही धरम दूर करें पर-बलेस को ॥
 भारती के मन्दिर में पूजा मनुजाई की हो,
 कोऊ देस कभू ना सतावै काऊ देस को ॥



काऊ छेत्र मांहि कोऊ ना तो बेईमानी करै,
 चाँची होय काम औ मजूरी खरी खूब हो ॥
 मत्र जन करें निज काम जुम्मेदारी मानि,
 ऐसी काम मिलै नहीं जासों याकूँ ऊब हो ॥
 मुग़्र भाग मग़्र अधिकार शत हों न पाँय,
 मानुस कूँ दारि रोटी पसून कूँ दूब हो ॥
 घर घर मांहि गाड़ी बेल हल टैक्टर हों,
 हरँ रूप मांहि लग्यो मोटर की द्यूब हो ॥



देस के सुनागरिक भूलें ना कर्त्तव्य कभूँ,
 संविधान की ती मान सबई करयी करें ।
 कृसक हमारे स्वेद बूँदन सों सीचि सीचि,
 देस के भंडार हीरा मोती सों भरयी करें ॥
 गंया बेल भेत कुआ श्रम सों विकस होय,
 कल कारखाने समस्यान कूँ हरयी करें ।
 ऊर पूर जल उमग्यीई करै भेत न्यार,
 जगमग जोति तम तोम कूँ हरयी करें ॥



चालक युवा ती भायी कर्णधार देस के हैं,
 बिनकी सिच्छा औ स्वास्थ्य पर सब ध्यान दें ।
 पढि लिखि बनें ये सपूत औ सुपुत्री सब,
 मैया दाऊ बडेन कूँ सदा पूरी मान दें ॥
 खामें पीमें सुद्ध सतोगुनी बनें जानवान,
 नम्र स्वाभिमानी सब छाँड़ि अभिमान दें ।
 निज भासा संस्कृति औ रीति नीति नेही होंय,
 जन्म भूमि हेत भीतिहीन कूँ केँ प्राण दें ॥



संसदीय प्रजातंत्र सफल बनत जब,
 मतदाता जानें निज मत के प्रताप को ।
 ना तो हो दबाव नाही दंड फंद भेद होंय,
 कोऊ करै नाय धूसखोरी हू के पाप को ॥
 होय कोऊ योग्य, गुनी चरित कौ सुद्ध नम्र,
 ऐसो हो निस्पन्द पच्छ लेबै नहीं वाप को ।
 विजयी बनें ओ काम करै देम हित मानि,
 सेवा करै जनता की दूरि करै ताप को ॥



देम की विधायिनी बनायै नेम धर्ममुत्त,
 कार्यकारिणी कौ काम लागू करवानों है ।
 न्यायपालिका हो मुक्त भीतिहीन सक्तिवान,
 तोरे जो कानून बासों दंड भरवानों है ॥
 प्रथमकरण सनित कौ ती न्याय हितकारी,
 बामें सहयोग सीनों अंगन समानों है ।
 जनता के हेत, जनद्वारा जनता कौ राज,
 सचि प्रजातंत्र कौ सुजस यों कमानों है ॥



नेता नीतिधारी बनें दूरि करिबे तूँ दुःख,
 जोरें नहीं धन धूसखोरी व्यभिचार सों ।
 जेती हो सम्पत्ति बाकी लेया जोखा साफ रहै,
 जोरे नहीं हेत दुराचार अनाचार सों ॥
 भासन भी चाटन नतर उदघाटन में,
 समं नहीं घोमें निज ग्याति के विचार सों ।
 ऊंचे हों आदर्स, कहें सोई करें भीतिहीन,
 दूरि रहें झूठे सांचे सस्ते नृप्रचार सों ॥



काम जो विभाग की सुपुर्द हो प्रभारी हस्त,
 यामें हस्तक्षेप जननेतान की भूल है ।
 ऐसे प्रतिमान अपवादहीन बनि जाय,
 भंग करिबे सों प्रतिक्रिया प्रतिबल है ॥
 कर्मचारी हों या अधिकारी, निज काम करें,
 सेवा की दसा ती सब हेत अनुकूल हैत
 सब मेरे देस की प्रगति अर्धवान बनें,
 देस के विकास की सुनाव लगे बल है ॥



चाटुकारिता की चाव बाजू के न चित्त माँहि,
 हनन चरित की ध्रुनित अपराध है ।
 निन्दा करिबो तो निसक्य नीति मानी जाय,
 झूठे दोसरोपन दनुजता की साथ है ॥
 नाम जो विरोधी दल, कहें सहयोगी तिन्हें,
 देस हित माँहि राखे थदा हू अगाय है ।
 मिति जुनि काम करें, देस हू महान करें,
 बात चीत सों हीं मिटे शगरी फसाद है ॥



चिहलपीं मिटेगी जब सुखभाव सम होय,
 देस में समाजवाद हिंसाहीन लानों है ।
 कोऊ लें इकार, कोऊ नाज-दाँत बेर परे,
 ऐसी भेदभाव वेग मूल सों मिटानों है ॥
 गूब पैदाबार स्वैत हरित मुक्रान्ति लाय,
 सूने में गरसना की सोत हू वहानों है ।
 दूरि की गुरीति, भीति, भेदभाव - आपाधापी,
 एक बेर केरि हिन्द सोने की बनानों है ॥



मुजम कूँ सुख होय, सेवा मनुजाई विस्व,
 सुख अधिकामें दुःख मूल सों नसि जाँय ।
 न्याय हो समाज राज नीति पुन्य सिवधाम,
 सबकूँ मुलच्छय निज जीवन के मिल जाँय ॥
 मुजम समृद्धि स्वान्त सुख परलोक मोच्छ,
 लोक परलोक हू सुफल बनत जाँय ।
 धर्म अर्थ काम मोक्ष ऐसे धुलि मिल रहें,
 देवता भली मानें घर केऊ खीर खाँय ॥



नन सिव साहित्य की रचना हो देस माँहि,
 पाठन-पठन में हू बर ग्रन्थ काम लें ॥
 दया काल में ही उठि सह नीर न्हाय धोय,
 पूजा पाठ करें निज इस्ट कौऊ नाम लें ।
 दान पुन्य जीव दया बडेन की सेवा करें,
 बर परिधान औ मुरुचि युत धाम लें ।
 नर नारी बाल वृद्ध नेह मनमान पामें,
 सत् बरग जीमें फेर चिर आराम लें ॥



जाको जोऊ धर्म होय याको निरबाह करि,

बिना रोक थाम के सुसी की पारावार हो ।

रोटी कपड़ा और मकान सुविधा सों मिलें.

वृद्धजन हेत कछू जीवन आश्रार हो ॥

नैया दाऊ हीन कोऊ घालक अनाथ या कि,

विधवा, अपंग, धाँधी कंसोऊ लाचार हो ।

गैसों की प्रबन्ध करै राज औ समाज मिल'

पाऊ पै ना कहै नेरहू न अत्याचार हो ॥



चिकित्सालय हीं सब हेत थोरी थोरी दूरि,

सेवा हो निसुल्क जन जन रोगहीन हो ।

बस, उपबंध, टाक्टर, नर्स, कम्पाउण्डर,

हर एक सेवा भावी कर्म लवलीन हो ॥

पंचायत, नगर की पालिका या परिषदें,

देखें सब स्वस्थ रहें, नहीं कोऊ छीन हो ।

नियमित सफाई हो दवा छिरकाव करे,

कोऊ जगै कहै पै न नेंकऊ मलीन हो ॥



राज नें प्रबन्ध सब करि दीनें ऊर पूर,
 देखनां है कहै दुरुपयोग ना ह्वै पाय ।
 बिजुरी जरामें जेती उचित हो, मुल्क देमें,
 देखे कोऊ नलहू कहै पै ना टूटि जाय ॥
 सार्वजनिक सम्पत्ती की नास कोऊ करे ना,
 तीरे कानून वानी सूचना हू दई जाय ।
 पुलिस, प्रसासन कू सत्र सहयोग देमें,
 असामाजिक तत्व बिना दंड रूँ है न जाय ॥



देस सम्मान साहित्यकारन कू पूरी देय,
 अध्यापक गुरुन की उचित सम्मान हो ।
 "जय जवान जय किसान" की बात भूलें ना,
 मजदूर वर्ग कोऊ समुचित मान हो ॥
 जानें पायी जनम मुनागरिक हिन्द की ऐ,
 जासों कहै देस की कभूँ न अपमान हो ॥
 तेमे जन काऊ जाति धरम बरग के हों,
 प्रगति विकास गुष और गमान हो ॥



मिट्टे युवा रोस, अनुसासन अखण्ड सान्ति,
 सब समस्या के सुलभ समाधान हों ।
 दीनता समूल नासै, थमै अपराध-ब्राह्म,
 नौकरी की खातिर न लोग परेसान हों ॥
 मँहगाई थमै सब चीज मिलें एक दाम,
 ल्हारै परिवार ही गृहस्थीन की सान हों ।
 पूरे होंय ध्येय जब राज तौ प्रबन्ध करे,
 जनता की सहयोग देवै की रक्षान हों ॥



राम औ रहीम गुरु नानक या ईसा देव,
 बुद्ध महावीर सब वंदना के जोग है ।
 धर्म सब श्रेष्ठ होंय सबके सिद्धान्त ठीक,
 भेदभाव पैदा करे वे निकृष्ट लोग हैं ॥
 दूजे के धरम की जो निन्दा करे पापी हैं वो,
 नरक में जाय भोगें नारकीय भोग है ।
 गय धर्म एक राम मानि माथी नवे जाकां,
 बाके ताई मान्ति मुख सुलभ सुयोग है ॥



सब धर्म ग्रन्थ बानी बोलें एक जैसी दिव्य,
 भासा सैली भिन्न पं विसय धस्तु एक है ।
 ईस्वर है एक बाकी भिन्न भिन्न रूप देखयो,
 मारग अनेक परि गन्तव्य तो एक है ॥
 फेर कैंसी मतभेद काहे की नराई प्यारे,
 माघन अनेक तांऊ माघ्य सांची एक है ।
 मोमें तोमें वामें शैया ! भेद कहां दीय रह्यो,
 काया हैं अनेक तोऊ प्रान तत्व एक है ॥



तन आतमा की परिधान, सो तो नास जोग,
 जीर्ण परिधान फेंक नूतन गहत है ।
 गीता में कही है भगवान नें जो बात सांची,
 आतम अमर ब्रह्म रूप ही नहत है ॥
 नासी है सरीर बाके ताईं पाप किन करूं ?
 चेतन प्रवाह सब काल में बहत है ।
 पानी ना गरार्वे आगि याहि ना जरावें ई तौं,
 वायु ना बहार्वे गीता ग्यान यों कहत है ॥



यासों लं कें सोख सब नेह सों निबाह करी,
 सरो भिरी मति सब ईस केई अंस हैं ।
 भेजे दुनियाँ में कछू नेकनामी करिबे कूँ,
 घात करें बेटो भारे कूर औ नृसंस हैं ॥
 भारत की भूमि पै जनम लीयो, अन्न खायो,
 ई तो पुन्य भूमि जाये ईस अवतंस हैं ।
 याजी मेवा करें वे तो राम कृष्ण रूप पामें,
 घात करें जोहू वे तो रावन औ कंस हैं ॥



कहै मय भैया भेन मानि लेऊ सींग्र सांधी,
 देग सेवा सम कोऊ पुन्य ना अपर है ॥
 जीयँ जन देस हित, स्वेद बूँद मुक्ता माल,
 देस हित मरँ बूँद मानस अमर है ॥
 अघ्रि की बूँद बूँद देसहित काम आवै,
 याकी ही रच्छा के हेत जीतनों समर है ॥
 यागँ यति जाय कवि प्राण बेरि बेरि हंसि,
 देस मेरी गुरग सों मुनि श्रेष्ठतर है ॥

भारत

शाखा

घाटि कसि काम करिबे हूँ शूदी कर्म क्षेत्र,
कोटि कोटि कर्म धीर काम करवाओ रे ।
समै को सदुपयोग सूक्ष्म ग्राहस सों,
सान्तिपूर्ण साधनों से समृद्धि सजाओ रे ॥
देश के दारिद्र्य को दलन दूरदासिता सों,
दलबन्दी दुरदृष्टता दलन दूनवाओ रे ।
भारत के भैया भेन भूरि भूति भक्ति भाव,
भू सों भूरि भेदभाव भीति हूँ भगाओ रे ॥



हरे भरे घेत दीखें परिधान बीच गोरी,
नवल सुनागरी सी भू नें साज साजे हैं ।
सर राजि लता कल कलित कुसुम कुंज,
साध साध पंथी वृन्द त्रजत सु बाजे हैं ॥
झूम झूम झूमें सर सरित रालिल कल,
अचल सुचल वन वाटिका विराजे हैं ।
शोक हितकारी जनतंत्र को विभव धर,
जन जन मन बजें गाजे अरु बाजे हैं ॥



खिले फूल से हों नर किसलय सी नारि हों,
 बाल वृन्द कलित कलिक सम सोहते ।
 सबके निवास साफ-सूफ खुले हवादार,
 आंगन में लता पेड़ पौधे मन मोहते ॥
 ना तो घर कलह केन्द्र रारि न पडौसी सों,
 सबन कूँ खाते पीते सब जन जोहते ।
 समै पै तो काम करें कसर न राखें कोऊ,
 पाय अवकास हँसी मोद सों विमोहते ॥



गामन सों बाहर वर्गीची सब ओर होंय,
 बने हों अघाड़े कुआ बावडी तालाब हों ।
 आम नीम पीपल पपीता औ अनार नीप,
 हरे हरे पेड़न सों पूरे सब चाब हों ॥
 सांझ कूँ चौपाल, चौक, थान, चाई बैठें जरि,
 ग्रीस्म छिरकाव होंग जाड़े में अलाब हों ।
 ऐती सब बातन के संग संग ध्यान रहे,
 विश्व माँहि हूँ रहे जो वेऊ बदनाब हों ॥



देस पिछड़्यो ना रहै संग चलै औरन के,
 ऐसी प्रयास होय आगे हू निकरि जाय ।
 ग्यान विग्यान अरु तकनीकी यांत्रिकी के,
 छेत्रन की प्रगति में गती सों बढ़्यो जाय ॥
 डावर सड़क, जोरें हर गाम-महर सों,
 यातायात अरु संचार बढ़तीई जाय ।
 टी वी रेडियो कार-स्कूटर मोटर वाहन,
 सब कूँ मिलें हर जन सुविधा कूँ पाय ॥



कवि-डर-चाह हिन्द सुरग सों बढि जाय,
 प्रगति विकास के मुमार्ग ह्यौ प्रसस्त हों ।
 सत कर्म नित नये कीर्त्तिमान पायो करें,
 कर्म जो असुद्ध वे ती मूलन सों ध्वस्त हों ॥
 ना ती हो उत्तेजिना, सैथिल्य दोस होवे नाय,
 ना ती कोऊ मूँड़ चढे नाही कोऊ प्रस्त हों ।
 सब नागरिक निज काम सों ही काम राखें,
 मस्ती समै मस्त अरु काम समै ध्वस्त हों ॥



परिक्रमा दऊँ त्पारी गिरिराजं महाराज,
 पौछरी के लीटा मॉरे देस कूँ बचाइयो ।
 ब्रज राख्यो बूडती सो बाई बिधि गज तार्यी,
 हिन्द बूड्यी जाय नाथ ! नंगे पैर घाइयो ॥
 द्रोपदी की लाज राखी याकी हूँ ती राघि लेओ,
 बिदुर की नारि कूँ ज्यों नैह बरसाइयो ।
 वंसी के बजैया स्याम नाग के नयैया छैल,
 एक बेर फेर आन रासं हूँ रचाइयो ॥



सब देवतान कूँ मनाऊँ ब्रह्मा विस्नु सिव,
 निज निज धाम सों पधारी हिन्द देस में ।
 विगरी जो दसा बाय आनि कं सुधारी नाथं !
 विस्व गुरु बने याय पूजें देव बैस में ॥
 सरिता दही दूध की बंहेँ रत्नधाम बंनें,
 कोऊ रहैयां याकी रहै ना कुवेस में ।
 रामे जो परम्परा, सही हों अतीत की हूँ,
 करे अनुकूलन नवीन परिवेस में ॥



भारत

गाथा

देवताऽऽ स्वर्गधाम छोरि छोरि ह्यापि आमें,
ऐसी प्यारी न्यारी देस हिन्दू वनाइयो ।
हर-हिन्दवासी हो चरितवान ग्यानी गुनी,
ऐसी नई पीढी देस मांहि उपजाइयो ॥
न्यारे न्यारे हपरंग भासा भां धरम भिन्न,
सबकेई उर मांहि बंधुता जगाइयो ।
कूडो करकट औ बिद्वेस हिंसा फूट ग्लानि,
जरि जाय, आगि देस-भक्ति की लगाइयो ॥



कर जोरि कें विनती करूँ करुना रादन सुनि लीजियो ।
पूर्व-प्रभुता, नव उदय मम जन्म भू को दीजियो ॥
प्राचीन जो मुन्दर शिवं औ सत्य सों अभिषिक्त हो ।
हो समन्वित भव प्रगति सों, जो असुचि वो रिक्त हो ॥
धन्य कधि के भाग भारत भूमि सी जननी मिली ।
पाय सुचि उपवन धरा पै, मुग्ध उर कलिका खिली ॥
रक्त है चन्दन यहाँ की नीर अमृत धार है ।
हर भवन ती हरिथली है कर्म पूजा सार है ॥



छाँड़ याकी अंक कूँ को सुरग-अभिलासा करे ?
 कवि हृदय की चाह है ह्याँई जिये ह्याँई मरे ॥
 जन्म भारत भूमि पै थी मरने याकी धूरि में ।
 तन बदन निसिदिन सने हों धूरि-जीवन मूरि में ॥

हो प्रगति नित नित नई हे जन्म भू ! मंगलमयी ।
 त्तारे सुवन सुरभित सुमन सयके मुमन हों उर-जयी ॥
 मोदमय मंगलमयी मृदुतामयी मनहारिनी !
 फूँने फलं फलदायिनी मन मोद मंगल कारिनी ॥

धनि भारत धनि भारती, धनि धनि कवि के भाग ।
 महिमा पतन विकास लिख, प्रगट कीन्ह अनुराग ॥
 × × ×
 पराधीनता शृङ्खला, टूटी तम की नास ।
 नव सुतंत्रता प्राप्त भी, फैली सुनग उजाग ॥
 × × ×
 झुरि मिलि जन जन जय करें, गूँजे जय जय कार ।
 जन गन मन घुनि धन्य तू, मुदित सकल संसार ॥
 × × ×

नम सीकर सों सींचते, तर विकास के मूल ।
 उपवन मधुवन महकते, आतीं रितु अनुकूल ॥
 × × ×
 प्रभु सों इतनी चीनती, कान परं विसवास ।
 जनम जनम में दीजियो हिन्द देस की वास ॥
 × × ×

हे जन्म भू ! मनस-भावन में वंदना के सुर बजे ।
 बाल सुरभित सुमन पूरित अथु मुक्ता सों सजे ॥
 फूली फली फिर सों सुनहरी हो विहगिति सुभसनी ।
 निथिल जग में तुजस फँसे, वाह कवि-उर की घनी ॥



डा० रामकृष्ण शर्मा,

एन.ए. (हिन्दी-प्रेमित्री) पीएच.डी.

जन्म - २१ अक्टूबर १९१६

ब्रिटिश क्रांतिकार -

प्रारंभ में अंत तक प्रथम श्रेणी।

राजपूताना विश्वविद्यालय में स्वयं परक प्राध्यापकता

प्रसारण -

आकाशवाणी दिल्ली, बनारस तथा मधुरा में

अनवरत काव्य पाठ, बारांचि तथा अन्य

साहित्यिक विचारों के प्रसारण।

कवि सम्मेलन -

अग्रिम भारतीय कवि सम्मेलनों में

काव्य पाठ तथा मञ्चानन्द।

लेखन -

अनेक भारतीय मूल की परिभाषा तथा

पत्रों में कविताओं, लेखों तथा अन्य विचारों

का प्रकाशन।

सौमित्र ग्रन्थ :-

- १-भगवान महावीर महाकाव्य, २-काव्यानेर
- ३-सम्पत्ता सूर्य, ४-नारद सटसई, ५-दिकान्त
- सतसई, ६-यानीज-काव्य-सयह, ७-सरस
- निदध, ८-साहित्यिक निदध, ९-उत्तम
- कहानियाँ, १०-आरतीनगर-व्यपिच्छ और
- कौटिल्य।